सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 86 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 2 मई, 2026
मूल्य ₹ 3/-

यदि हम स्वतंत्र नहीं हैं तो कोई भी हमारा आदर नहीं करेगा।
-अब्दुल कलाम

टेस्ट रैंकिंग में भारत... 7 | छत्तीसगढ़ व राजस्थान में सियासी... 3 | नोएडा के श्रमिकों पर लगाए गए... 2

अब आवाज दबेगी नहीं संजय शर्मा के साथ खड़ा हुआ 'द हिंदू' अखबार

सच की लड़ाई को मिला साथ, प्रेस की आजादी की नई शुरुआत

» क्या सेफ हार्बर का ढांचा अब कंट्रोल का टूल बनता जा रहा है?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आज की सबसे बड़ी खबर यही है कि द हिंदू जैसे देश के प्रतिष्ठित अंग्रेजी अखबार ने 4PM और उसके संपादक संजय शर्मा के साथ हो रही एकतरफा सरकारी कार्रवाई, उनके चैनल पर पाबंदी को प्रमुखता से स्थान दिया है। इस सम्मानित मीडिया हाउस द्वारा इस मुद्दे को प्रमुखता देना इसी दिशा में एक संकेत देता है अब देश में प्रेस की आजादी एक ज्वलंत मुद्दा बन रही है और एक सवाल बनती जा रही है।

4PM पर पाबंदी अब सिर्फ एक चैनल की कहानी नहीं रही। बार-बार की ब्लॉकिंग और हर बार का वही पुराना पाबंदी का पैटर्न, क्या यह महज संयोग है या फिर एक सुनियोजित रणनीति है, जहां डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर दबाव बनाकर आलोचनात्मक आवाजों को सीमित किये जाने की कोशिश की जा रही है।

संजय शर्मा के संघर्ष को द हिंदू ने फुल पेज छाप कर उठाई आवाज

द हिंदू में छपी यह ग्राउंड रिपोर्ट साफ कहती है कि सेफ हार्बर अब सुरक्षित नहीं रहा। जिस कानून का मकसद डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को सुरक्षा देना था वही अब कंटेंट कंट्रोल का औजार बनता नजर आ रहा है। सवाल यह भी है कि जब प्लेटफॉर्म्स पर दबाव होगा तो क्या वह सच दिखा पाएंगे या सिर्फ सुरक्षित चलने की कोशिश करेंगे। गौरतलब है कि यह बात सिर्फ 4PM की नहीं है। यह हर उस पत्रकार की है जो बिना डर के सच दिखाना चाहता है। यह हर उस नागरिक की है जो सवाल पूछना चाहता है।

GROUND ZERO

Far from a safe harbour

9 वर्षों से पीछे पड़ी है सरकार

वर्ष 2017 के बाद से ही 4PM के संपादक संजय शर्मा पर सरकारी उत्पीड़नात्मक कार्रवाई जारी है। सरकार के अधिकार क्षेत्र में आने वाले सभी सरकारी टूल जांच एजेंसियों पुलिस, ईडी, एसटीएफ आदि का इस्तेमाल संजय शर्मा के उत्पीड़न करने में किया जा चुका है। उनके इशारों को दबाने के लिए ईओडब्ल्यू की जांच शुरू की गयी। उनके सवालों से बचने के लिए सरकार ने इनकम टैक्स विभाग के नोटिस जारी किये। उनको ईडी के जरिये डराये जाने की कोशिश की गयी। उनको दबाने के लिए एसटीएफ को लगाया गया गाड़ी का पीछा करना तो आम बात हो गयी। संजय शर्मा के 4PM दफ्तर पर सरकारी गुंडो ने हमला किया। यह बताने के लिए काफी है कि संजय शर्मा के पीछे किस तरह से सरकार हाथ धो कर पीछे पड़ी है। कहा जाता है कि लोकतंत्र में सवाल पूछना पत्रकार का धर्म है। अगर वही सवाल असुविधाजनक हो जाएं तो वहीं होता है जो संजय शर्मा के साथ हो रहा है। चैनल पर पाबंदी और व्यक्ति को डराने के लिए तरह-तरह के हथकंडे। यह सिर्फ एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। यह उस माहौल की कहानी है जहां पत्रकारिता और सत्ता के बीच की दूरी कितनी बची है यह कहना कठिन हो गया है। अगर एक आवाज बार बार कार्रवाई के घेरे में आती है तो सवाल सिर्फ उस आवाज पर नहीं उठता बल्कि उस व्यवस्था पर उठता है जिसमें यह सब हो रहा है।

एक पत्थर तो तबियत से उछाला जाए

एक दो दिन की बात हो तो समझ में आती है। लेकिन लगातार हो रहे सरकारी उत्पीड़न को यदि किसी व्यक्ति ने हिम्मत के साथ सामना किया है तो वह 4PM के संपादक संजय शर्मा हैं। 9 वर्षों से सरकारी उत्पीड़न झेल रहे संजय शर्मा ने हार नहीं मानी और संघर्ष का साथ नहीं छोड़ा। उनके संघर्ष को देखकर अब बड़े मीडिया संस्थान, बड़े अखबार और पत्रकारों के बड़े समूह उनका साथ देने खुलकर मैदान में आ चुके हैं। राज्यसभा में संजय शर्मा के उत्पीड़न का मुद्दा जब उठा तो पिन ड्राप सायलंस छा गया। प्रेस क्लब ऑफ इंडिया ने जब उनके उत्पीड़न के खिलाफ चिट्ठी लिखी तो उसका जवाब अभी तक नहीं मिला। एक बार फिर उनके संघर्ष को द हिंदू जैसे प्रतिष्ठित अखबार ने सराहा है और फुल पेज स्टोरी में प्रमुखता से जगह दी है।

द हिंदू में छपी रिपोर्ट गहरी तस्वीर पेश करती है

द हिंदू की ग्राउंड रिपोर्ट फॉर फ्राम सेफ हार्बर भारत में डिजिटल मीडिया और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बढ़ते दबाव की गहरी तस्वीर पेश करती है। रिपोर्ट बताती है कि किस तरह सेफ हार्बर के नाम पर बने नियम अब कंटेंट हटाने और आलोचनात्मक आवाजों को सीमित करने का जरिया बनते जा रहे हैं। आर्टिकल में 4PM के संपादक संजय शर्मा का उदाहरण सामने आता है जो पहले एक अखबार के संपादक थे और बाद में डिजिटल प्लेटफॉर्म 4PM के जरिए अपनी पत्रकारिता को जारी रखे हुए हैं। रिपोर्ट बताती है कि उनके कंटेंट और चैनल पर कई बार कार्रवाई हुई चैनल को बिना किसी नोटिस के ब्लॉक कर दिया गया। यह घटनाक्रम इस बात की ओर इशारा करता है कि स्वतंत्र और आलोचनात्मक मीडिया पर निगरानी और दबाव बढ़ रहा है।

संजय शर्मा एक केस स्टडी

4PM के संपादक संजय शर्मा का मामला इस पूरे मुद्दे को समझने का एक उदाहरण बन चुका है। पारंपरिक मीडिया से लेकर डिजिटल प्लेटफॉर्म तक उनकी यात्रा लगातार संघर्ष से भरी रही है। उनके कंटेंट पर बार-बार कार्रवाई चैनल ब्लॉकिंग और कानूनी दबाव यह दिखाते हैं कि कैसे एक स्वतंत्र आवाज को सीमित करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपनी पत्रकारिता जारी रखी जो इस बात का संकेत है कि डिजिटल युग में भी प्रतिरोध संभव है। लेकिन असली समस्या यह है कि संवेदनशील की परिभाषा स्पष्ट नहीं है। इससे कई बार आलोचनात्मक या असहज सवाल पूछने वाला कंटेंट भी हट जाता है। प्लेटफॉर्म्स कानूनी जोखिम से बचने के लिए अवसर बिना ज्यादा जांच के कंटेंट हटा देते हैं जिसे एक्सपर्ट्स ओवर कम्प्लायंस कहते हैं और इसका असर सीधे लोकतंत्र पर पड़ता है क्योंकि डिजिटल प्लेटफॉर्म आज आम नागरिक की आवाज बन चुके हैं। ऐसे माहौल में जब बड़े मीडिया संस्थान भी इन मुद्दों में शामिल होने लगते हैं और मुद्दे को उठाने लगते हैं तो वह सिर्फ घटना नहीं रह जाती बल्कि एक आंदोलन का रूप ले लेती है।

सेफ हार्बर का ढांचा अब कंट्रोल का टूल बनता जा रहा है?

रिपोर्ट में इन्फर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट 2000 और उसके तहत आने वाले नियमों खासकर सेफ हार्बर प्रावधान का जिक्र है जिसके तहत प्लेटफॉर्म्स को कानूनी सुरक्षा मिलती है। लेकिन शर्त यह है कि वह सरकारी आदेश मिलने पर कंटेंट तेजी से हटाएं। इससे प्लेटफॉर्म्स पर दबाव बनता है कि वह विवादास्पद या सरकार की आलोचना करने वाले कंटेंट को तुरंत हटा दें। रिपोर्ट यह भी बताती है कि हाल के वर्षों में कंटेंट हटाने की प्रक्रिया तेज हुई है और ज्यादातर मामलों में पारदर्शिता की कमी देखी गई है। सरकार द्वारा बनाए गए पोर्टल्स और मैकेनिज्म के जरिए बड़ी संख्या में पोस्ट और अकाउंट्स पर कार्रवाई हुई है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि कितनी सामग्री हटाई गई और किन आधारों पर इन्हें डिलीट किया गया। एक्सपर्ट का मानना है कि यह ट्रेंड अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए चुनौती बन सकता है क्योंकि इसमें ओवर-कम्प्लायंस यानी जरूरत से ज्यादा कंटेंट हटाने का खतरा है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि कई बार आलोचनात्मक और विपक्षी विचारों को टारगेट किया जाता है जिससे लोकतांत्रिक संवाद प्रभावित होता है। कुल मिलाकर यह आर्टिकल एक बड़े सवाल को सामने रखता है कि क्या डिजिटल इंडिया में अभिव्यक्ति की आजादी सुरक्षित है या फिर सेफ हार्बर का ढांचा अब कंट्रोल का टूल बनता जा रहा है?

नोएडा के श्रमिकों पर लगाए गए मुकदमे वापस ले सरकार : अखिलेश

सपा प्रमुख ने भाजपा पर किया फिर प्रहार

» कहा, हरदोई मामले की हो सीबीआई जांच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा पर करारा वार किया है। अखिलेश यादव ने श्रमिक दिवस के अवसर पर नोएडा के श्रमिकों पर लगाए गए मुकदमे वापस लेने और उन्हें पड़ोसी राज्यों के बराबर तनख्वाह दिए जाने की मांग भी की। अखिलेश यादव ने हरदोई की बेटी की घटना का जिक्र करते हुए कहा कि वर्चस्ववादी और भाजपा के समर्थक लोगों ने उसकी हत्या कर दी। उत्तर प्रदेश सरकार से उस परिवार को न्याय नहीं मिलेगा, इसलिए सीबीआई जांच हो। सरकार परिवार को आर्थिक मदद दे।

मायावती ने महिला आरक्षण पर भाजपा द्वारा बुलाये गए विधानसभा सत्र की तारीफ की थी। इस पर अखिलेश यादव ने कटाक्ष किया है। उन्होंने कहा कि बसपा सुप्रीमो मायावती ने या तो संसद में लाया गया बिल पढ़ा नहीं, या भाजपा ने उन्हें गलत सूचना दी। इसलिए उन्होंने (मायावती ने) महिला आरक्षण पर यूपी में बुलाए गए विशेष सत्र का स्वागत किया। महिला आरक्षण बिल तो अब कानून बन चुका है और भाजपा के नेता उस एक्ट के खिलाफ बोल रहे हैं।

भाजपा असंवैधानिक काम कर रही

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार देश की महिलाओं को आरक्षण नहीं देना चाहती है। महिला आरक्षण कानून के खिलाफ बोलकर भाजपा असंवैधानिक काम कर रही है। वो संसद से पास कानून नहीं स्वीकार कर रही है। भाजपा सरकार महिला आरक्षण संशोधन बिल के लिए संसद का सत्र ऐसे समय में बुलाया, जब पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव चल रहे थे। भाजपा विपक्षी दलों के सांसदों को चुनाव से चार-पांच दिन दूर करना चाहती थी।

आम जनता के साथ साजिश कर रही है भाजपा

सपा अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा लगातार आम जनता के साथ साजिश कर रही है। डाटा भरवा रहे हैं, लेकिन जातीय जनगणना नहीं करवा रहे हैं। महिला आरक्षण पर मुख्यमंत्री पहले क्या बोलते थे, अब क्या बोल रहे हैं। सभी ने देखा है। मुख्यमंत्री की भाषा गिरगिटी है। संसद में भाजपा की साजिश हार गई, इसलिए उत्तर प्रदेश विधानसभा में प्रस्ताव लेकर आए थे। परिसीमन के खिलाफ सभी विपक्षी दल एक हो गए, जिससे भाजपा के धोखे का पर्दाफाश हो गया। अपनी हार को छिपाने के लिए भाजपा महिलाओं को मुद्दा बनाना चाहती है।

स्मार्ट मीटर के नाम पर भरी जा रहीं अमीरों की जेबें

अखिलेश यादव ने कहा कि स्मार्ट मीटर के जरिये जनता की जेब काटी जा रही है। इसलिए जनता और महिलाएं आक्रोशित हैं। भाजपा गरीबों के पैसे निकालकर अमीरों की जेब भर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग कह रहे थे कि हरदोई में कोई कारखाना नहीं लगाया गया, जबकि सच्चाई यह है कि पेप्सिको का सबसे बड़ा कारखाना समाजवादी सरकार के माध्यम से हरदोई में लगा है। एक सवाल के जवाब में समाजवादी सरकार में धार्मिक यात्राओं में मदद होती थी। सरकार को सभी धार्मिक यात्राओं में मदद करनी चाहिए। यही हमारे देश की खूबसूरती है।

बोरे न होने से गेहूं खरीद नहीं

अखिलेश ने कहा कि प्रदेश सरकार बोरों की खरीद के लिए टेंडर ही नहीं कर पाई। इसलिए गेहूं की खरीद नहीं हो पा रही है।

यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय की तबीयत में सुधार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय को अचानक स्वास्थ्य बिगड़ने के बाद लखनऊ के मेदांता अस्पताल के आपातकालीन वार्ड में भर्ती कराया गया है।

» पीएम मोदी ने जताई चिंता

अस्पताल के अधिकारियों के अनुसार, फिलहाल उनकी स्थिति स्थिर है और डॉक्टरों की एक विशेष टीम उनकी निगरानी कर रही है।

मेदांता अस्पताल के निदेशक डॉ. राकेश कपूर ने 'को बताया कि राय शुक्रवार शाम करीब छह बजे अपने आवास पर अचानक बेहोश हो गए थे, जिसके बाद उन्हें अस्पताल लाया गया। कपूर ने बताया कि जांच में पता चला है कि राय के शरीर में सोडियम की कमी हो गई थी और उनका रक्तचाप भी बढ़ा हुआ था। उन्होंने बताया कि चिकित्सकों ने उन्हें तुरंत उपचार दिया, जिसके बाद उनकी स्थिति में सुधार हुआ है। अस्पताल के निदेशक ने बताया कि चिकित्सकों की एक टीम उनके स्वास्थ्य परलगातार नजर रखे हुए है और फिलहाल राय होश में हैं, बातचीत कर रहे हैं तथा हालत स्थिर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अजय राय के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। मोदी ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय जी के अस्वस्थ होने का समाचार प्राप्त हुआ है। मैं उनके जल्द से जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

समाज में हर शोषित व्यक्ति को न्याय दिलाने के लिए पूरी ताकत से खड़े होंगे कांग्रेसी : अविनाश

» कांग्रेस का भाजपा पर तीखा हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव व प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडेय ने कहा कि शिक्षक और चिकित्सक भविष्य के निर्माता हैं। यह वर्ग भीड़ का हिस्सा नहीं बल्कि भीड़ को सम्बोधित करता है। सामाजिक न्याय के लिए हमें समाज में हर शोषित व्यक्ति को न्याय दिलाने के लिए पूरी ताकत के साथ खड़े रहना है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सत्ता में आने के बाद पुरानी पेंशन बहाल करेगी।

वह बुद्ध पूर्णिमा व श्रमिक दिवस पर राजधानी स्थित गांधी भवन में प्रदेश कांग्रेस कमेटी शिक्षक व चिकित्सा प्रकोष्ठ की ओर से आयोजित शिक्षकों व चिकित्सकों के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस कमेटी अनुसूचित जाति विभाग के चेयरमैन व सांसद तनुज पुनिया, पूर्व सांसद रवि प्रकाश वर्मा, मुईद अहमद पूर्व मंत्री, सदल प्रसाद पूर्व मंत्री, उप कांग्रेस कमेटी शिक्षक व चिकित्सक प्रकोष्ठ के चेयरमैन डॉ. अमित कुमार राय, डॉ. आज़ाद बेग, डॉ. मनीष हिंदवी, प्रो. श्रवण कुमार गुप्ता उपस्थित थे।

जिनकी डिग्री फर्जी, उनके वादे भी फर्जी : सुप्रिया श्रीनेत

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सोशल मीडिया की चेयरपर्सन सुप्रिया श्रीनेत ने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा है कि वह लोग जो अपनी स्वयं की डिग्री नहीं दिखा सकते हैं। हम उनसे शिक्षा को आगे बढ़ाने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। जिनकी डिग्री फर्जी है, उनके वादे भी फर्जी है। उन्होंने कहा कि देश में शिक्षकों के लाखों पद खाली हैं। उन्होंने कहा कि जहां 3012 डॉक्टरों की आवश्यकता है वहां 812 डॉक्टरों से काम चलाया जा रहा है। शिक्षकों और चिकित्सकों के खाली पदों को नहीं भरा जा रहा है, जिसका असर आम जनता पर पड़ रहा है।

शिक्षा और चिकित्सा को भाजपा सरकार ने व्यवसाय बना दिया : अजय राय

प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि शिक्षक और चिकित्सक समाज के सजग और जिम्मेदार प्रहरी हैं। एक चिकित्सक शरीर को स्वस्थ्य रखता है। वहीं शिक्षक बेहतर समाज की नींव रखता है। आज सभी स्कूल कॉलेजों आदि शिक्षण संस्थानों को बेचा जा रहा है। उनका निजीकरण किया जा रहा है। सरकारी अस्पतालों की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। शिक्षा और चिकित्सा को भाजपा सरकार ने व्यवसाय बना दिया है।

बिहार का नाम बदलकर श्रमिक प्रदेश कर दें : तेजस्वी

नौकरी पर सम्राट प्लान पर विपक्ष का वार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने रोजगार पर अटैक शुरू कर दिया है । इसका संकेत उन्होंने पहले ही कैबिनेट में नौकरी देने की घोषणा कर अपनी तेवर साफ कर दिया है। सम्राट चौधरी ने नौकरियों की बौछार के साथ-साथ रोजगार की वृद्धि के लिए चुनौती भी स्वीकार करते फर्स्ट कैबिनेट से ही सम्राट चौधरी ने न केवल राज्य सरकार के फोरम पर बल्कि निजी फोरम पर उद्योग का दरवाजा खोलने की उम्मीद दिखा दी है।

मगर, सम्राट चौधरी के रोजगार से जुड़े फैसले पर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने तंज कसा है। वो कहते हैं कि पूत के पांव पालने में ही झलकने लगते हैं। तेजस्वी यादव ने एनडीए सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि बिहार का नाम बदलकर श्रमिक प्रदेश कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के नाम लिए बिना ही कहा कि नाम बदलने के विशेषज्ञ भाजपाइयों, खासकर बिहार के नए-नवेले मुख्यमंत्री को नाम बदलकर श्रमिक प्रदेश कर देना चाहिए। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने बयान जारी कर आरोप लगाया कि बिहार पिछले 21 वर्षों में औद्योगिक उत्पादन में बेहद पीछे लेकिन लेबर सप्लाई में अव्वल रहा है।

उन्होंने कहा कि राजग सरकार पलायन रोकने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है, जिससे बिहार के मजदूर मजबूर होकर घर से दूर रहने को विवश हैं। उधर नौकरियों को लेकर बहुत कुछ ऐसा ही पहले कैबिनेट की बैठक से ही दिखने लगा। नीतीश नीत सरकार के स्लोगन के साथ मुख्यमंत्री बने सम्राट चौधरी ने अपना इरादा साफ कर लिया कि वे हर हाल में एक करोड़ जनता को रोजगार देंगे। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने नौकरी से ज्यादा महत्व रोजगार को दिया। इस लिहाजन उद्योगपतियों के साथ बैठक करने के बाद सम्राट चौधरी के निशाने पर फूड प्रोसेसिंग यूनिट है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

देश में बड़ी संख्या में मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी नहीं मिल पा रही : गहलोत

» कांग्रेस नेता बोले- श्रमिकों की वर्तमान स्थिति गंभीर चिंता की बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर मीडिया से बातचीत करते हुए अशोक गहलोत ने श्रमिकों की वर्तमान स्थिति को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज भी देश में बड़ी संख्या में मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी तक नहीं मिल पा रही है, जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ के ऐतिहासिक नारे का जिक्र करते हुए कहा कि हालात अब भी चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं।

गहलोत ने नोएडा में हाल ही में हुए घटनाक्रम का उल्लेख करते हुए कहा कि जब मजदूर सड़कों पर उतरते हैं तो यह सरकारों के लिए चेतावनी होती है। उन्होंने उद्योगपतियों और मालिकों की जिम्मेदारी पर जोर देते हुए कहा कि मजदूरों का ख्याल रखना केवल कानूनी ही नहीं, बल्कि नैतिक कर्तव्य भी है।

राजस्थान की स्थिति पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश मजदूरी के मामले में देश में सबसे नीचे है, जो चिंता का विषय है। उन्होंने बताया कि उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर मजदूरी बढ़ाने की मांग की है, ताकि श्रमिकों में संतोष और सामाजिक सद्भाव बना रहे। गहलोत ने अपनी सरकार के दौरान पारित गिग वर्कर्स कानून का भी उल्लेख किया और कहा कि इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया था। उनका आरोप है कि वर्तमान सरकार ने इस कानून को लागू करने में कोई गंभीरता नहीं दिखाई और इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया है। सिलिकोसिस बीमारी पर बोलते हुए गहलोत ने इसे बेहद गंभीर समस्या बताया। उन्होंने कहा कि खनन क्षेत्रों में सुरक्षा उपायों की अनदेखी के कारण मजदूर इस जानलेवा बीमारी का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने मालिकों को सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराने और मजदूरों को उनका उपयोग सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी निभाने की अपील की। उन्होंने यह भी कहा कि कई बार मजदूर खुद भी लापरवाही करते हैं, जिसका परिणाम घातक होता है। सिलिकोसिस से पीड़ित मरीजों की स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि यह बीमारी बेहद कष्टदायक होती है और अंतत: जान ले लेती है। गहलोत ने बताया कि उनकी सरकार ने सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए आर्थिक सहायता के रूप में 5 लाख का पैकेज दिया था, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि यह राशि जीवन के नुकसान की भरपाई नहीं कर सकती।

छत्तीसगढ़ व राजस्थान में सियासी घमासान

बीजेपी पर गलत राजनीति करने का लगाया आरोप

» भाजपा के करतूत से कांग्रेस परेशान
» भूपेश बघेल के कथित एआई वीडियो पर कांग्रेस भड़की
» सचिन पायलट को बहरुपिया बताने पर कांग्रेस आगबबूला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आज कल कांग्रेस के दो दिग्गज नेता सुर्खियों में है। एक हैं छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल व दूसरे हैं राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट दानों ही नेता अपने विपक्षी दल भाजपा की हरकतों से चर्चा बटोर रहे है।

जहां पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के कथित फेक एआई वीडियो को लेकर छत्तीसगढ़ में सियासी माहौल गरमा गया है। वीडियो को आपत्तिजनक और भ्रामक बताते हुए कांग्रेस ने कड़ा विरोध दर्ज कराया है और इसे सुनियोजित चरित्र हनन की साजिश बताया है। वही भाजपा नेता राधामोहल अग्रवाल के पायलट 'बहुरूपिया' बयान पर सियासी घमासान मचा है। भाजपा अध्यक्ष मदन राठौड़ ने समर्थन किया है तो कांग्रेस नेता अशोक गहलोत ने कड़ा एतराज किया।

अशोक गहलोत पर भी दागे सवाल

बातचीत के दौरान राठौड़ ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर भी तीखे सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि वे गहलोत का सम्मान करते हैं, लेकिन उनके उस बयान ने सवाल खड़े किए हैं, जिसमें उन्होंने माफी मांगने की बात कही थी। राठौड़ ने उदाहरण देते हुए कहा कि जब केंद्रीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने पाकिस्तान को लेकर कड़ा बयान दिया था, तब गहलोत की प्रतिक्रिया पर भी सवाल उठते हैं। इस मुद्दे को लेकर उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व की सोच पर भी टिप्पणी की। राठौड़ ने गहलोत पर सचिन पायलट को लेकर 'कंट्रोल' करने के आरोप लगाए। उन्होंने सवाल किया कि गहलोत पायलट को 'बच्चा' क्यों समझते हैं और उनके फैसलों में दखल क्यों देना चाहते हैं।

राधामोहन दास अग्रवाल के समर्थन में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने राधामोहन दास अग्रवाल के उस बयान को सही ठहराया, जिसमें उन्होंने सचिन पायलट को 'बहुरूपिया' कहा था। राठौड़ ने कहा कि राधामोहन दास अग्रवाल उत्तर प्रदेश से आते हैं और पायलट का भी उत्तर प्रदेश से संबंध रहा है, इसलिए वहां की राजनीतिक भाषा और अभिव्यक्ति अलग हो सकती है।

धूमिल करने के उद्देश्य से भ्रामक, असत्य एवं आपत्तिजनक सामग्री प्रसारित की

फेक एवं आपत्तिजनक एआई जनरेटेड वीडियो को लेकर कांग्रेस ने कड़ा विरोध दर्ज कराया है। जिला कांग्रेस कमेटी, दुर्ग (ग्रामीण) जिलाध्यक्ष राकेश ठाकुर, दुर्ग शहर अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल और भिलाई नगर अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर के संयुक्त नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने पुलिस अधीक्षक दुर्ग विजय अग्रवाल से मुलाकात कर तत्काल एफआईआर दर्ज करने और सख्त कार्रवाई की मांग की। पुलिस अधीक्षक अग्रवाल ने कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल को दो दिन में कार्यवाही का आश्वासन दिया है। प्रतिनिधिमंडल ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपते हुए बताया कि इंस्टाग्राम पर 'कांग्रेस पोल खोल' एवं 'रैंडम छत्तीसगढ़' आईडी के माध्यम से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की छवि धूमिल करने के उद्देश्य से भ्रामक, असत्य एवं आपत्तिजनक सामग्री प्रसारित की जा रही है।

फेक एआई वीडियो पर कांग्रेस का आक्रोश

कांग्रेस जिलाध्यक्ष राकेश ठाकुर ने इस हरकत को व्यक्तिगत चरित्र हनन का प्रयास बताया। उन्होंने कहा कि यह समाज में वैमनस्य फैलाने और राजनीतिक वातावरण को विषाक्त करने की साजिश है। इस प्रकार की हरकतों से कांग्रेस कार्यकर्ताओं और आम जनता में भारी आक्रोश व्याप्त है। कांग्रेस ने इस मामले में तत्काल कार्रवाई की मांग की है। भविष्य में ऐसे एआई जनरेटेड दुष्प्रचार पर रोक लगाने हेतु ठोस कदम उठाने पर भी जोर दिया गया। ठाकुर ने चेतावनी दी, शीघ्र कार्रवाई न हुई तो जनआंदोलन होगा, जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल ने दो दिन में कार्रवाई का आश्वासन दिया, जिससे कांग्रेसी शांत हुए।

पायलट समझदार नेता हैं और अपना फैसला खुद कर सकते हैं

मदन राठौड़ ने कहा कि वे मानते हैं कि सचिन पायलट एक अच्छे व्यक्ति हैं, लेकिन उनकी पार्टी पर निशाना साधते हुए बोले कि कांग्रेस में राष्ट्रीयता का भाव कमजोर हो चुका है। पायलट के भाजपा में आने के सवाल पर उन्होंने कहा कि पायलट समझदार नेता हैं और अपना फैसला खुद कर सकते हैं। उन्होंने संकेत देते हुए कहा कि उन्हें वहीं जाना चाहिए जहां 'राष्ट्र प्रथम' की भावना हो। पायलट को क्या ऑफर दिया जाएगा, इस सवाल पर राठौड़ ने कहा कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार फल मिलता है।

राठौड़ ने गिनाए पायलट के पांच स्वरूप

बड़ी संख्या में कांग्रेसजन जुटे

मदन राठौड़ ने बातचीत के दौरान सचिन पायलट के पांच स्वरूप गिनाते हुए अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि पहला स्वरूप उनका सरल, खूबसूरत और सौम्य व्यक्तित्व है। दूसरा स्वरूप तब देखने को मिला जब उन्हें अपने पिता राजेश पायलट की प्रतिमा पर माल्यार्पण से रोका गया और उनका रौद्र रूप सामने आया। राठौड़ ने कहा कि तीसरा स्वरूप तब दिखा जब वे कांग्रेस की नीतियों से असंतुष्ट होकर बगावत पर उतर आए। चौथा स्वरूप तब सामने आया जब कांग्रेस आलाकमान ने सुलह और माफी का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा कि फिलहाल पायलट का पांचवां स्वरूप देखने को मिल रहा है, जिसमें वे फिर से सरल और सभ्य नजर आते हैं।

इस दौरान पूर्व विधायक अरुण वोरा, धर्मेंद्र यादव, नीरज पॉल, आरएन वर्मा, कृष्णा चंद्राकर, संजय कोहले, राजेश साहू, सीजू एंथोनी, कैलाश नाहटा, देवेंद्र देशमुख, संतोष बाफना, ओमप्रकाश जोशी, राहुल शर्मा, देव सिन्हा, विमल यादव, बृजमोहन तिवारी, द्वारिका साहू, सुरता सिंह गढ़े, पालेश्वर ठाकुर, लोचन यादव, मोहित वालदे, जय प्रकाश साहू, अभिषेक जांगड़े, सुमित नारंग, शिशिरकांत कसार, सुनीत घोष, रितेश बंजारे, प्रमोद यादव, संदीप कुमार सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित थे।

बिहार के बाद अब दक्षिणी राज्य आंध्र में बड़ी हलचल

नारा लोकेश बने टीडीपी के कार्यकारी अध्यक्ष

» निशांत कुमार बने हैं जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अमरवती। उत्तर भारत के अहम राज्य बिहार में सियासी बदलाव के बीच दक्षिण में भी बड़ी हलचल सामने आई है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू के बेटे और मंत्री नारा लोकेश को तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है।

उन्हें टीडीपी का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है। आंध्र प्रदेश की सत्ता पर काबिज टीडीपी के संगठन में बड़े बदलाव को काफी अहम माना जा रहा है। टीडीपी में अब तक मुख्य रूप से दो प्रमुख नेता राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। एन. टी. रामा राव (एनटीआर) पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष थे। उन्होंने 1982 से 1995 तक नेतृत्व किया। एन. चंद्रबाबू नायडू 1 सितंबर 1995 से पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

नारा लोकेश अब अहम भूमिका में आए

75 साल की आयु को पार कर चुके आंध्र प्रदेश के सीएम एन चंद्रबाबू नायडू के बेटे नारा लोकेश राजनैतिक उत्तराधिकारी हैं। नारा लोकेश के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनने से पार्टी पर उनकी पकड़ अब काफी अहम हो जाएगी। टीडीपी ने संगठन की नई टीम का ऐलान किया है। नारा लोकेश ने राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाए गए हैं जब पल्ला श्रीनिवास नए प्रदेश अध्यक्ष बने हैं। पार्टी ने 29 सदस्यों वाला पोलित ब्यूरो, 31 सदस्यों वाली राष्ट्रीय समिति और 185 सदस्यों वाली प्रदेश समिति का गठन किया है। नारा लोकेश अभी आंध्र प्रदेश के आईटी मिनिस्टर हैं।

महिला नेता को बनाया महासचिव

टीडीपी ने अपनी पहली महिला राष्ट्रीय महासचिव, सांसद डॉ. बायरेड्डी शबरी को भी नियुक्त किया है। वह सांसद राम मोहन नायडू और राजेश किलारू के साथ राष्ट्रीय महासचिव के रूप में काम करेंगी। प्रदेश समिति के 185 सदस्यों में से 122 सदस्य कमजोर वर्गों से आते हैं। प्रतिनिधित्व में पिछड़े वर्गों से 77 सदस्य, अनुसूचित जातियों से 25, अनुसूचित जनजातियों से 7 और अल्पसंख्यक समुदायों से 13 सदस्य शामिल हैं। चंद्रबाबू नायडू की अगुवाई वाली टीडीपी आंध्र प्रदेश में पवन कल्याण की अगुवाई वाली जनसेना और बीजेपी के साथ मिलकर सरकार चला रही है। नायूड केंद्र के नानी फैक्टर के अहम हिस्से हैं। जिसके बल पर पीएम मोदी की अगुवाई वाली एनडीए सरकार चल रही है। नानी फैक्टर में ना का मतलब नायडू और नी से नीतीश कुमार है। नीतीश कुमार बिहार के सीएम की कुर्सी छोड़कर दिल्ली का रुख कर चुके है। नारा लोकेश के प्रमोशन को अहम माना जा रहा है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

पंचायत चुनाव सामान्यजन के द्वार तक जाने का माध्यम

यूपी में पंचायत चुनाव करवाने की मांग तेजी से हो रही है। पर सरकार जैसे कान पर हाथ रखकर बैठी हुई है। जबकि इस बात अदालत भी हस्तक्षेप कर चुकी है। हालांकि राज्य के मंत्री भी कोर्ट के आदेश पर इन चुनावों को जल्द करवाने की मांग कर रहे। सरकार को भी और गंभीरता से इसे लेना चाहिए क्योंकि पंचायतों के कार्यकाल पूरा होने वाला है और अब चुनाव टल गए तो प्रशासकों के हाथ में व्यवस्था चली जाएगी जिससे जनता के हित से जुड़े काम प्रभावित होंगे। लोकतंत्रीय राजनीतिक व्यवस्था में पंचायती राज ही वह माध्यम है, जो शासन को सामान्यजन के द्वार तक लाता है। स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्रीय विकेंद्रीकरण की दिशा में हुए प्रयासों में 24 अप्रैल 1993 को पारित 73वां संविधान संशोधन अधिनियम सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं गंभीर प्रयास रहा है। इस संशोधन अधिनियम से जहां एक ओर इन संस्थाओं को वैधानिक दर्जा मिला वहीं दूसरी तरफ ऐसे समुचित उपबंध किए गए, जिससे कि पंचायतें स्वशासन की स्वतंत्र इकाइयां बनकर सरकार के तीसरे स्तर के रूप में कार्य कर सकें। इस व्यवस्था के क्रियान्वयन को तीन दशक से अधिक का समय हो चुका है। पंचायतों में छठी पीढ़ी का कार्यकाल चल रहा है।

समाज के सभी वर्गों की वृहद राजनीतिक भर्ती इस सम्पूर्ण व्यवस्था से संभव हुई। राज्यों ने पंचायत कानून में कई बदलाव कर व्यवस्था को ज्यादा तर्कसंगत और कार्यान्वयन की दृष्टि से अनुकूल बनाने का प्रयास किया है। जन-केंद्रित शासन प्रदान करने के लिए पंचायती राज संस्थाएं सबसे बेहतर विकल्प हैं, लेकिन अधिकांश राज्यों में यह अनुभव रहा है कि पंचायतें केंद्र एवं राज्य सरकारों की एक कार्यान्वयन एजेंसी (अनुक्रम विभाग) की तरह कार्य करती है। राज्यों में स्थानीय स्तर पर नौकरशाही की अतिरिक्त प्रभावशाली स्थिति निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की भूमिका को गौण करते हैं। पंचायतों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत स्थानों का आरक्षण होने के बावजूद अधिकांश राज्यों में पंचायतों में प्रॉक्सी नेतृत्व की उपस्थिति चिंतनीय पहलू है। प्रभावशाली विकेंद्रीकृत अभिशासन के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि पंचायती राज व्यवस्था स्थानीय लोगों की जरूरतों, इच्छाओं, पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ अच्छी तरह से संयोजन करते हुए निर्वाचित जनप्रतिनिधि ईमानदारी, योग्यता और लोक सेवा के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। अभिशासन को लोकतांत्रिक, सबको साथ लेकर चलने वाला, पारदर्शी और जवाबदेह होना चाहिए। जमीनी स्तर पर राजनीतिक गत्यात्मकता जटिल हैं, जिनमें कई हितधारक सम्मिलित होते हैं, जिनका अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग प्रभाव होता है। पंचायत गांवों को विकास की दौड़ में आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम हैं।

“ लोकतंत्रीय राजनीतिक व्यवस्था में पंचायती राज ही वह माध्यम है, जो शासन को सामान्यजन के द्वार तक लाता है। स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्रीय विकेंद्रीकरण की दिशा में हुए प्रयासों में 24 अप्रैल 1993 को पारित 73वां संविधान संशोधन अधिनियम सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं गंभीर प्रयास रहा है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

ब्रिटिशकालीन विरासत के नाम बदलने का सवाल

विवेक शुक्ला

दिल्ली, प्रयागराज, लखनऊ, कानपुर, मेरठ और कई अन्य शहरों में सिविल लाइंस की चौड़ी सड़कें, दोनों तरफ खड़े विशाल और बुजुर्ग पेड़, पुराने गिरजाघर और औपनिवेशिक इमारतें ब्रिटिश राज के विलासी जीवन की याद दिलाते हैं। अब भारत सरकार इन सिविल लाइंस क्षेत्रों से ब्रिटिश काल के प्रतीकों को हटाने पर गंभीरता से विचार कर रही है। यह कदम वर्ष 2047 तक भारत को पूर्ण रूप से डीकॉलोनाइज्ड बनाने के विजन का हिस्सा है। ये इलाके विशेष रूप से ब्रिटिश सिविलियन अधिकारियों जैसे डिविजनल कमिश्नर, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट आदि के लिए बनाए गए थे, ताकि वे भारतीय 'नेटिव टाउन' से अलग, आरामदेह जीवन व्यतीत कर सकें। 19वीं शताब्दी में विकसित ये 'व्हाइट टाउन' आज भी अनेक शहरों में मौजूद हैं। वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद ब्रिटिशों ने अपनी सुरक्षा और श्रेष्ठता को और मजबूत करने के लिए शहरों को दो हिस्सों में बांट दिया।

एक ओर पुरानी, भीड़भाड़ वाली भारतीय बस्तियां, तो दूसरी ओर विस्तृत सड़कें, हरे-भरे बगीचे, बड़े बंगले और आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित 'सिविल लाइंस'। ये क्षेत्र कैंटोनमेंट से अलग लेकिन निकट थे। यहां ब्रिटिश सिविल सर्वेंट्स, जज, कलेक्टर आदि उच्च अधिकारी रहते थे। दिल्ली में सिविल लाइंस का इतिहास 1857 से गहराई से जुड़ा है। मुगल राजधानी शाहजहानाबाद (पुरानी दिल्ली) के उत्तर में, यमुना नदी के किनारे बसा यह क्षेत्र ब्रिटिशों का पहला प्रमुख आवासीय केंद्र बना। 1803 में दिल्ली पर कब्जा करने के बाद वे शुरू में कश्मीरी गेट क्षेत्र में रहते थे, लेकिन 1857 के विद्रोह ने सब बदल दिया। विद्रोहियों ने ब्रिटिश बंगलों को आग के हवाले कर दिया। विद्रोह दबाने के बाद अंग्रेजों ने सिविल लाइंस को रणनीतिक रूप से और मजबूत किया। यह क्षेत्र रिज (उत्तर दिल्ली रिज) के पास स्थित था, जो सैन्य दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण था। लुटियंस दिल्ली (नई दिल्ली) बनने तक सिविल लाइंस ही ब्रिटिश प्रशासन का मुख्य केंद्र रहा।

आज भी यहां निकोलसन कब्रिस्तान मौजूद है, जो 1857 में स्थापित हुआ। यह कब्रिस्तान ब्रिटिश सैनिकों और अधिकारियों की मौत के बाद बनाया गया था। यहां ब्रिगेडियर जॉन निकोलसन की कब्र है, जो विद्रोह दबाने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले ब्रिटिश अधिकारी थे। इस कब्रिस्तान के

पास बना चर्च स्थानीय ईसाई समुदाय के लिए था। यह पूरा इलाका आज भी रहस्यमयी कहानियों और पैरानॉर्मल घटनाओं से जुड़ा माना जाता है। एक अन्य महत्वपूर्ण प्रतीक है कुदसिया बाग। मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला की बेगम कुदसिया द्वारा 1748 में बनाया गया यह चारबाग शैली का सुंदर बगीचा 1857 में ब्रिटिशों द्वारा नष्ट कर दिया गया। बाद में यहां अंग्रेजी शैली का बंगला बनाया गया। हाथी गेट भी यहीं है, जिसे बहादुर शाह जफर ने बनवाया था। मोटी दीवारों वाला यह गेट ब्रिटिश काल में सिविल लाइंस की सीमा बन गया। मैडंस होटल (अब ओबेरॉय मैडंस) दिल्ली के सिविल लाइंस का एक शानदार नमूना है। यह हेरिटेज होटल सफेद इमारत, पुरानी लॉबी और स्विमिंग पूल के साथ औपनिवेशिक वास्तुकला का जीवंत उदाहरण है। अलीपुर रोड पर स्थित पुराना सेक्रेटेरिएट भवन, जिसमें 19 ब्रिटिश गवर्नर जनरल (वायसरॉय) कार्यरत रहे, आज इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वीमेन बन चुका है। मेटकाफ हाउस भी सर थॉमस मेटकाफ का निवास था। ये सभी इमारतें ब्रिटिश शासन की सत्ता और प्रतिष्ठा के प्रतीक थीं। प्रयागराज का सिविल लाइंस सबसे प्रसिद्ध है। वर्ष 1858 के बाद कमिश्नर कथबर्ट बेंसली थॉर्नहिल ने इसे 'कैनिंगटन' नाम से विकसित किया। ग्रिड पैटर्न वाली सड़कें, ब्रिटिश बंगले, एंग्लिकन चर्च, थिएटर और सोशल क्लब इसे एक मॉडल बनाते थे। ब्रिटिश काल के प्रतीक इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से वास्तुकला के जरिये जीवित हैं। इधर मिलते हैं विक्टोरियन और एडवर्डियन शैली के बंगले, जो भारत की जलवायु के अनुकूल बरामदों और ऊंची छतों के साथ बने थे। स्वतंत्रता के बाद अधिकांश मूर्तियां हटा दी गईं, लेकिन नाम और इमारतें बनी रहीं।

आजादी के बाद सिविल लाइंस धीरे-धीरे भारतीयों के लिए भी खुले। आज ये क्षेत्र मिश्रित हैं। सरकारी बंगले, कॉलेज, होटल और व्यावसायिक इमारतें यहां मौजूद हैं। लेकिन 'सिविल लाइंस' नाम अभी भी औपनिवेशिक विरासत को जीवित रखे हुए है। सिविल लाइंस ब्रिटिश राज में विकास के साथ-साथ शोषण और अलगाव की नीति के गवाह हैं। दिल्ली का सिविल लाइंस 1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिश पुनर्स्थापना का प्रतीक बना, जबकि प्रयागराज का मॉडल अन्य शहरों के लिए मिसाल साबित हुआ।

घर-बाहर के दबाव में तनाव झेलती महिलाएं

दीपिका अरोड़ा

'मल्टीटॉस्किंग' एक नैसर्गिक गुण है, महिलाएं जिसमें विशेष रूप से माहिर मानी गई हैं। यूं भी अधिकतर भारतीय परिवारों में घरेलू कार्य स्त्रियों के ही हवाले रहते हैं, भले ही वह अतिरिक्त भार उठाने में सक्षम हो अथवा न। परंपरागत समाज के लिए यह आम बात हो सकती है किंतु परिवर्तित परिदृश्य में दोहरे दायित्व का निर्वहन कहीं न कहीं नारी-स्वास्थ्य पर भारी पड़ रहा है। हेल्थ स्टार्टअप त्राया द्वारा भारत के 15 राज्यों की 5,35,373 महिलाओं पर किया नवीनतम सर्वेक्षण देश में लगभग 50 प्रतिशत महिलाओं के प्रतिदिन क्रॉनिक स्ट्रेस झेलने का खुलासा करता है। पश्चिम बंगाल में 52.2 प्रतिशत महिलाएं तनाव की शिकार हैं, तमिलनाडु एवं दिल्ली में यह आंकड़ा क्रमश: 50.5 तथा 47.8 प्रतिशत है। सर्वाधिक चिंताजनक है, तनाव की कोई आकस्मिक घटना न होकर निरंतर चलने वाली समस्या बनना, जो कि नींद से लेकर महिलाओं के हार्मोनल स्वास्थ्य तक को चपेट में ले रही है।

सर्वे के निष्कर्ष बताते हैं कि कार्य तथा व्यक्तिगत जीवन में असंतुलन, कार्यस्थल पर होने वाला भेदभाव, आर्थिक दबाव तथा सामाजिक अपेक्षाओं के फलस्वरूप उपजते तनाव से महिलाओं की मूलभूत आवश्यकताएं बहुतेरे प्रभावित हो रही हैं। लगभग 5 में से 2 महिलाएं पर्याप्त निद्रा नहीं ले पा रहीं, वहीं हर 2 में से 1 महिला पेट तथा पाचन संबंधी समस्याओं से जूझ रही है। रिपोर्ट के अनुसार, असल में ये सभी दिक्कतें अलग-अलग न होकर परस्पर जुड़ी हुई हैं। कुल मिलाकर यह उसी तनाव के परिणाम हैं, जिसे महिलाएं नित्यप्रति ढो रही हैं। विशेषज्ञों की मानें तो, पारिवारिक-सामाजिक भूमिका के तहत महिलाओं से अत्यधिक अपेक्षाएं रखने वाली पारंपरिक सोच तथा आधुनिक जीवनशैली के आपसी द्वंद्व ने समस्या और गहरा दी है। शोध के मुताबिक, 72.2 प्रतिशत कामकाजी महिलाएं उच्च तनाव में हैं, जो पुरुषों (53.64 प्रतिशत) से काफी अधिक है।

90 प्रतिशत महिलाएं यद्यपि मानती हैं कि स्वास्थ्य मुद्दे उनकी उत्पादकता को प्रभावित करते हैं, तथापि भारतीय समाज की रूढ़िवादी सोच के कारण वे मदद मांगने से झिझकती हैं। इसका एक बड़ा कारण आज भी व्यापक स्तर पर व्याप्त लिंगभेद है। सर्वे यह भी बताता है कि महिलाओं से लगातार ज्यादा काम की उम्मीद पालने वाली संकीर्ण सोच में यह कम ही पूछा जाता है कि क्या उनके पास इसे निभाने के लिए जरूरी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा बची भी है या नहीं? घर-कार्यस्थल में सामंजस्य बिठाने का प्रयास एवं प्रत्येक कार्यक्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन की चाह तनाव के रूप में उभरकर उदासी, अवसाद, चिड़चिड़ेपन आदि अनेकानेक व्याधियों की उत्पत्ति का निमित्त बन रही है। दुर्भाग्य से आज भी भारतीय समाज में मानसिक रोगों को गंभीरतापूर्वक नहीं लिया जाता। महिलाओं के संदर्भ में तो स्थिति विशेषकर निराशाजनक है। उनके स्वास्थ्य के प्रति पारिवारिक दायित्व अथवा सामाजिक जागरूकता के बारे तथ्य खंगालें तो सर्वे के मुताबिक, अधिकांश मामलों में महिलाओं की भावनाओं एवं उनके मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज कर दिया जाता है, जिस कारण तनाव, चिंता गहरे अवसाद में परिणत होने लगते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्थिति और भी जटिल है। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, साक्षरता का अभाव, निर्धनता तथा अंधविश्वासी प्रवृत्ति के चलते मानसिक रोगों को भूत-प्रेत की छाया अथवा जादू-टोने का प्रभाव मान लिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में डॉक्टरी मदद लेने की बजाय ओझा, तांत्रिक या झाड़-फूंक करने वालों को तरजीह दी जाती है, जो महिलाओं की हालत को और बिगाड़ देते हैं। कई मामलों में मौत तक हो जाती है। अपनी सेहत की अनदेखी करने में महिलाएं भी कम दोषी नहीं। आमतौर पर स्त्रीवर्ग अपना ध्यान रखने अथवा क्षमता के अनुरूप कार्य करने की बजाय दूसरों की जरूरतों को अधिक अधिमान देता है। सबका ख्याल रखना निस्संदेह, एक सराहनीय गुण है, किंतु कर्तव्य-पालन के अतिरेक में यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि 'सबका' शब्द में महिलाएं खुद भी शामिल हैं। तनाव ढोती महिलाओं की चुप्पी कालांतर में स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती बन सकती है। इससे पूर्व कि तनाव जीवन को अस्त-व्यस्त कर डाले, काउंसलिंग करना अनिवार्य हो जाता है। असल में, नर-नारी, परिवार तथा समाज रूपी गाड़ी चलाने वाले दो पहिए हैं।

किसी भी पहिए पर क्षमता से अधिक बोझ लादना उसे क्षतिग्रस्त बना छोड़ेगा। देश की आधी आबादी का स्थाई तौर पर तनाव से जूझना मात्र स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा न होकर समग्र रूप में एक बहुआयामी सामाजिक समस्या है। मानवीय आधार पर समझना होगा कि महिलाओं की भावनात्मक जरूरतें भी पुरुषों जितनी ही महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें अनदेखा करना सरासर अन्याय है। डॉक्टरों के कथनानुसार, दीर्घकालीन तनाव के प्रति बरती गई कोताही भविष्य में असाध्य रोग बन सकती है। भीतर ही भीतर घुटने की अपेक्षा क्यों न परिजनों को शिष्टतापूर्वक अपनी मनोस्थिति से अवगत करवाया जाए ताकि समय रहते समुचित समाधान मिल सके? इसके लिए समाज, परिवार तथा सरकार को मिलकर एक ऐसा माहौल सृजित करना होगा, जहां महिलाएं नि:संकोच अपनी समस्याएं साझा कर सकें। मिल-बांटकर काम करने से जहां कार्यभार घटेगा, वहीं रिश्तों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी; तनावरहित नारी अधिक आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा स्वस्थ जीवन जी पाएगी।

फेस फैट के लिए करें ये चार योग

आज के दौर में हर कोई शार्प जॉलाइन वाला चेहरा चाहता है, लेकिन व्यस्थ जीवनशैली और प्रोसेस्ड फूड के कारण बहुत से लोगों के चेहरे पर अतिरिक्त चर्बी जमा हो जाता है। एक्सपर्ट्स इसे फेस फैट कहते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि चेहरे का भारीपन न सिर्फ आपके आत्मविश्वास को प्रभावित करता है, बल्कि यह आपको आपकी वास्तविक उम्र से बड़ा भी दिखाता है। ऐसी स्थिति में आमतौर पर लोग तमाम मंहगे ब्यूटी प्रोडक्ट्स का सहारा लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसे योग हैं जिसका पालन करके आप अपने फेस फैट को कम कर सकते हैं। फेस योग चेहरे की मांसपेशियों में रक्त संचार को तेज करता है और त्वचा के लचीलेपन को बनाए रखता है, जिससे चेहरे पर प्राकृतिक चमक लौट आती है और झुर्रियां कम होने लगती हैं। जिस तरह शरीर को फिट रखने के लिए जिम जरूरी है, उसी तरह चेहरे की 57 से अधिक मांसपेशियों को हेल्दी रखने के लिए कुछ खास व्यायाम की जरूरत होती है। अगर आप रोज दिन भर में मात्र 5 से 10 मिनट भी इन चार योगासनों का अभ्यास करते हैं, तो कुछ ही हफ्तों में आपको एक नेचुरल फेसलिफ्ट का अनुभव होगा।

गाल फुलाना

ये एक्सरसाइज उन तमाम लोगों के लिए है जिनके चेहरे में डलनेस है। दरअसल, इस एक्सरसाइज को करने से चेहरे में ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है और स्किन पोर्स खुल जाते हैं। इससे त्वचा में ताजगी आती है और हर स्किन पोर्स तक ऑक्सीजन का सप्लाई होता है। इसे करने के लिए गहरी सांस लेकर अपने दोनों गालों को हवा से फुलाएं और 10 सेकंड तक रोकें। यह गालों के आसपास के फैट को कम करता है और चेहरे को एक उभरा हुआ और आकर्षक बनाता है। देखा जाए तो प्राकृतिक सुंदरता ही इंसान की असली पहचान होती है। बेहतर परिणामों के लिए योग के साथ-साथ पर्याप्त पानी पीना और नमक का सेवन कम करना भी जरूरी है। इससे आपके चेहरे की रंगत में सुधार होता।

सिंह मुद्रा

सिंह मुद्रा या लायन पोज करने के लिए मुंह को जितना हो सके उतना चौड़ा खोलें और अपनी जीभ को बाहर निकालें। अपनी आंखों को पूरी तरह खुला रखें और शेर की तरह दहाड़ते हुए सांस छोड़ें, यह आसन चेहरे की सभी नसों को सक्रिय करता है। यह मुद्रा चेहरे की मांसपेशियों में तनाव को कम करती है और टॉक्सिन्स को बाहर निकालकर त्वचा को भीतर से साफ और चमकदार बनाती है। इसलिए ये एक्सरसाइज उन तमाम लोगों के लिए है जो अपना फेस स्वस्थ्य रखना चाहते हैं।

फिश फेस

अपने गालों और होठों को अंदर की ओर इस तरह खींचें कि आपका चेहरा मछली जैसा दिखे। इस योग को रोज 5 बार करें और कम से कम से एक बार में 20 सेकंड तक रोकें, यह गालों की ढीली मांसपेशियों को कसने और उन्हें टोन करने के लिए सबसे बेहतरीन व्यायाम है। फेस योग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसे आप कहीं भी और कभी भी कर सकते हैं।

जॉलाइन लिफ्टर

सिर को पीछे की ओर झुकाएं और छत की ओर देखें, फिर अपने निचले जबड़े को इस तरह आगे धकेलें कि आपकी ठुड्डी में खिंचाव महसूस हो। इस मुद्रा को 10 सेकंड तक रोकें और कम से कम 5 बार दोहराएं, यह न सिर्फ डबल चिन को खत्म करता है बल्कि आपकी जॉलाइन को भी शार्प बनाता है। इस योग के नियमित अभ्यास से गर्दन की त्वचा में कसाव आता है और सैगिंग स्किन की समस्या दूर होती है।

हंसना मना है

आज कुछ घबराये से लगते हो, ठंड में कपकपाये से लगते हो, निखर कर आई है सुरत आपकी, बहुत दिनों बाद नहाये से लगते हो।

टीटू का सिर फट गया, मिट्टू- यार, ये कैसे हो गया, टीटू- अब क्या बताऊं यार, मैं पहले जूते से ईंट फोड़ रहा था तभी लूलू शराबी ने कहा कभी अपनी खोपड़ी भी काम में ले लिया करो, फिर क्या खोपड़ी ही फूट गई।

एक दिन संता अपनी भाभी को पीट रहा था, राह चलते लोगों ने पूछा क्यों मार रहे हो इस बेचारी को? संता बोला- मेरी भाभी अच्छी औरत नही है, लोगो ने पूछा- क्यों क्या हुआ? संता बोला- यार मेरे सभी दोस्त मोबाइल पर लगे रहते है, और जिसे भी पुछू तुम लोग किस से बात कर रहे हो? तो सब बोलते है तेरे भाभी से।

पति अपनी नाराज पत्नी को रोज फोन करता है। सासूजी: कितनी बार कहा की वो अब तुम्हारे घर नहीं आएगी, फिर क्यों रोज-रोज फोन करते हो? जमाई: सुन कर अच्छा लगता है इसीलिए।

बच्चे के पेपर में 0 आया। गुस्से से पिता- यह क्या है? बच्चा- पिताजी, शिक्षक के पास स्टार खत्म हो हो गए थे, इसलिये उसने मून दे दिया।

कहानी — विद्वत्ता पर कभी घमंड न करें

महाकवि कालिदास रास्ते में थे। प्यास लगी। वहां एक पनिहारिन पानी भर रही थी। कालिदास बोले- माते! पानी पिला दीजिए बडा पुण्य होगा। पनिहारिन- बेटा मैं तुम्हें जानती नहीं। अपना परिचय दो। मैं पानी पिला दूंगी। कालिदास ने कहा- मैं मेहमान हूं। पनिहारिन बोली- तुम मेहमान कैसे हो सकते हो? संसार में दो ही मेहमान हैं। पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ कौन हो तुम? तर्क से पराजित कालीदास अवाक रह गए। कालिदास बोले- मैं सहनशील हूं। पनिहारिन ने कहा- नहीं, सहनशील तो दो ही हैं। पहली, धरती जो पापी-पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है। उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है, दूसरे पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं। सच बताओ तुम कौन हो? कालिदास मुर्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्ला उठे! कालिदास बोले- मैं हठी हूं। पनिहारिन बोली-फिर असत्य। हठी तो दो ही हैं। पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो बार-बार निकल आते हैं। कालिदास ने कहा- फिर तो मैं मूर्ख ही हूं। पनिहारिन ने कहा- नहीं मूर्ख दो ही हैं। पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है, और दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए ग़लत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है। कालिदास वृद्धा पनिहारिन के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे! वृद्धा ने कहा- उठो वत्स! आवाज सुनकर कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात माता सरस्वती वहां खड़ी थी, कालिदास पुनः नतमस्तक हो गए, मां ने कहा- शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार से। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा। कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रह सकता है। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। कोर्ट व कचहरी के काम मनोनुकूल रहेंगे।

वृषभ — व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। धैर्य रखें। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। पुराना रोग परेशानी का कारण रह सकता है।

मिथुन — प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। बेवजह कहासुनी हो सकती है। कानूनी अड़चन दूर होगी। व्यापार में वृद्धि होगी।

कर्क — कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शत्रु पस्त होंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें। स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल होंगे। निवेश शुभ रहेगा।

सिंह — विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का मौका मिलेगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। दुष्टजनों से दूरी बनाए रखें। निवेश शुभ रहेगा।

कन्या — लाभ के अवसर हाथ से निकलेंगे। बेवजह कहासुनी हो सकती है। पुराना रोग उभर सकता है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। व्यापार ठीक चलेगा।

तुला — पराक्रम बढ़ेगा। लंब समय से रुके कार्य सहज रूप से पूर्ण होंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। शेयर मार्केट में सफलता मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक — दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बनी रहेगी। अज्ञात भय रहेगा।

धनु — आंखों का ख्याल रखें। अज्ञात भय सताएगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। कानूनी अड़चन आ सकती है।

मकर — व्यवसाय की गति धीमी रहेगी। आय में निश्चितता रहेगी। कोई बड़ी समस्या आ सकती है। धैर्य रखें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। चिंता तथा तनाव रहेंगे।

कुम्भ — व्यवसाय ठीक चलेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। शारीरिक कष्ट संभव है तथा तनाव रहेंगे। सुख के साधन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

मीन — आराम तथा मनोरंजन के साधन उपलब्ध होंगे। यश बढ़ेगा। व्यापार वृद्धि होगी। नई योजना बनेगी जिसका तत्काल लाभ नहीं मिलेगा। कार्यप्रणाली में सुधार होगा।

हालीवुड | रिलीज डेट

सिनेमा की दुनिया में अपना अलग मुकाम बनाना चाहते हैं रणवीर

सोनाली बेंद्रे के पति व फिल्ममेकर गोल्डी बहल ने अपने बेटे रणवीर बहल के फ्यूचर प्लान के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि रणवीर किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं और किस ओर उन्होंने अपना फोकस देना शुरू किया है। वैरायटी इंडिया के साथ हालिया बातचीत में गोल्डी बहल ने बताया कि बेटे रणवीर बहल सिनेमा की दुनिया में ही आना चाहते हैं और वो सिनेमा में अपना अलग मुकाम बनाना चाहते हैं। हालांकि, तमाम स्टारकिड्स से विपरीत रणवीर एक्टिंग में नहीं जाना चाहते, बल्कि उनका रुझान फिल्म मेकिंग की ओर ज्यादा है। बेटे को लेकर गोल्डी बहल ने कहा कि वह फिल्म निर्माता बनना चाहता है। फिलहाल वह फिल्म की पढ़ाई कर रहा है और फिल्में और अन्य कंटेंट बनाना चाहता है। वह एक बहुत अच्छा एडिटर है और एडिटिंग में काफी रुचि रखता है। हालांकि मुझे ठीक से नहीं पता कि वह क्या करना चाहता है, लेकिन जब तक वह जो कर रहा है उससे खुश है, तब तक ठीक है। गोल्डी बहल का मानना है कि उनके बेटे को फिल्म इंडस्ट्री में आने की कोई जल्दी नहीं है। उन्होंने कहा कि वह अभी बहुत छोटा है, सिर्फ 20 साल का। उसे अपनी पढ़ाई पूरी करने दो, फिर उसे अपने दर्शकों को समझने दो और उनके लिए कोई फिल्म, सीरियल या जो भी वह बनाना चाहे, बनाए। हो सकता है कि वह कोई वीडियो गेम बनाए या लाइव-एक्शन, एनीमे या ऑगमेंटेड रियलिटी में कुछ बनाए। मैंने अपने जीवन में सबसे बड़ा सबक यह सीखा है कि आप जो भी कर रहे हैं उसमें आनंद आना चाहिए। मैं समझता हूं, पैसा बहुत सारे आनंद की भरपाई कर सकता है। लेकिन ज्यादातर समय, अगर आपको आनंद नहीं आ रहा है, तो आप पैसा नहीं कमा पाएंगे। गोल्डी बहल और सोनाली बेंद्रे की लव स्टोरी की बात करें तो सोनाली बेंद्रे सिर्फ 22 साल की थीं, जब उन्हें गोल्डी बहल मिले थे। वह पुराने जमाने के फिल्म निर्माता रमेश बहल के बेटे हैं। सोनाली बेंद्रे और गोल्डी बहल बॉलीवुड के सबसे प्यारे जोड़ों में से एक हैं।

'कर्तव्य' निभाने को तैयार सैफ अली खान

बॉलीवुड | मसाला

सैफ अली खान जल्द ही खाकी वर्दी में अपना 'कर्तव्य' निभाते नजर आएंगे। नेटफ्लिक्स की उनकी आगामी फिल्म 'कर्तव्य' की रिलीज डेट आज सामने आ गई है। टीजर के जारी होने के बाद से ही फैंस फिल्म का इंतजार कर रहे थे, अब आज मेकर्स ने फिल्म की रिलीज डेट घोषित कर दी है।

शाहरुख खान के प्रोडक्शन हाउस रेड चिलीज एंटरटेनमेंट के तले बनी पुलिस-ड्रामा फिल्म 'कर्तव्य' नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने आज एक पोस्ट के जरिए फिल्म की रिलीज डेट घोषित की है। जिसके तहत 'कर्तव्य' 15 मई से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम करेगी। नेटफ्लिक्स ने फिल्म से सैफ अली खान का एक पोस्टर साझा किया। इसमें सैफ पुलिस की वर्दी में निराश नजर आ रहे हैं। उनके सामने आग जलती दिख रही है। इसके साथ ही कैप्शन में लिखा गया, 'कर्तव्य के इस चक्रव्यूह में हर फैसला एक इम्तिहान होगा।'

'कर्तव्य' की कहानी एक पुलिस अधिकारी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो ऐसी दुनिया में अपना काम करने की कोशिश करता है जहां सही और गलत की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है। जहां उसके सामने भावनात्मक और नैतिक दुविधाएं आती हैं, क्योंकि वह पेशेवर जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत हितों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है। जैसे-जैसे खतरे बढ़ते हैं, अधिकारी खुद को अपनी सीमाओं तक धकेला हुआ पाता है और न्याय की कीमत और चुप्पी के परिणामों पर सवाल उठाने लगता है।

फिल्म का निर्देशन 'भक्षक' फेम पुलकित ने किया है। फिल्म में सैफ अली खान मुख्य भूमिका में हैं। इसके अलावा रसिका दुगल, संजय मिश्रा, जाकिर हुसैन और मनीष चौधरी सरीखे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म का निर्माण शाहरुख खान की रेड चिलीज एंटरटेनमेंट के तहक किया गया है। इसे प्रोड्यूस गौरी खान ने किया है। 'सेक्रेड गेम्स' की सफलता के बाद सैफ अली खान एक बार फिर पुलिस वाले किरदार में नजर आएंगे।

करियर के शुरुआत में प्रियंका को नहीं आता था डांस

प्रियंका चोपड़ा इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म वाराणसी को लेकर चर्चा में हैं। अपने करियर में उन्होंने बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक का सफर तय किया है। उन्होंने फिल्मों में फाइट सीन, डांस और इमोशनल सीन किए हैं। हालांकि अभिनेत्री का मानना है कि वह हमेशा से हर चीज में इतनी अच्छी नहीं थीं। उनके मुताबिक जब उन्होंने अपना फिल्मी करियर शुरू किया था, तब वह डांस में बहुत खराब थीं। इस बारे में उन्होंने बात की है।

वोग अरेबिया के साथ बातचीत में प्रियंका चोपड़ा ने बताया जब मैंने पहली बार शुरुआत की थी, तब मैं डांस में बहुत खराब थी। मैं एक ही समय में एक्टिंग और कोरियोग्राफी को ठीक से नहीं कर पाती थी। साथ ही अपने को-स्टार के साथ तालमेल भी नहीं बिठा पाती थी। मेरे 19 या 20 साल के दिमाग के लिए यह सब एक साथ करना बहुत मुश्किल लग रहा था।

प्रियंका ने बताया कि इसी कमी की वजह से उनकी पहली फिल्मों में से एक के सेट पर सीनियर कोरियोग्राफर के साथ अनबन हो गई। उन्होंने बताया, मैं साउथ अफ्रीका में राजू खान के साथ शूटिंग कर रही थी और अपने निशान पर ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। वह मुझसे इतने नाराज हो गए कि उन्होंने माइक नीचे फेंक दिया और कहा, तुम शायद किसी ब्यूटी कॉन्टेस्ट से आई हो, लेकिन एक्ट्रेस बनने से पहले डांस करना सीख लो। फिर वह वहां से चले गए और मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई।

प्रियंका ने बताया कि एक बेहतर डांसर बनने के लिए मैंने डांस सीखा। उन्होंने कटरीना कैफ के साथ रोजाना छह घंटे प्रैक्टिस की। उस समय, कटरीना भी बॉलीवुड की एक उभरती हुई स्टार थीं। हालांकि वह अपने डांस के लिए पहले से ही मशहूर थीं। डांस सीखने के बाद प्रियंका देसी गर्ल और राम चाहे लीला जैसे डांस नंबर्स में नजर आईं।

प्रियंका चोपड़ा हाल ही में फिल्म द ब्लफ में नजर आईं। एक्ट्रेस अब आठ साल बाद राजामौली की फिल्म वाराणसी के साथ भारतीय सिनेमा में वापसी करने जा रही हैं। इस फिल्म में महेश बाबू और पृथ्वीराज सुकुमारन मुख्य भूमिका में हैं। यह अप्रैल 2027 में रिलीज होने वाली है।

अजब-गजब | हिम्बा जनजाति की महिलाओं की जीवनशैली है अजोबो-गरीब

ये महिलाएं जिंदगी में सिर्फ तीन बार नहाती हैं फिर भी इनकी खूबसूरती का हर मर्द दीवाना!

भारत में गर्मियां अपने तेवर दिखाने लगी है. पसीने से बचने के लिए लोग दिन में दो-तीन बार नहा रहे हैं। लेकिन दुनिया में एक ऐसी जनजाति है जहां महिलाएं पूरी जिंदगी में पानी से सिर्फ तीन बार नहाती हैं, फिर भी उनकी त्वचा चमकदार रहती है और शरीर से प्राकृतिक खुशबू आती है।

हम बात कर रहे हैं दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका के नामीबिया देश की प्रसिद्ध हिम्बा जनजाति की। हिम्बा जनजाति नामीबिया के काओकोलैंड क्षेत्र के रेगिस्तानी इलाके में रहती है। यहां पानी बेहद कीमती है। ऐसे में उन्होंने पानी का उपयोग न्यूनतम रखने की अनोखी परंपरा विकसित कर ली है। नहाने में पानी वेस्ट करने की जगह उन्होंने दूसरा ही जुगाड़ निकाला है। इसके बाद भी उनसे बदबू नहीं, खुशबू आती है।

कई साइट्स के मुताबिक, हिम्बा महिलाएं लाइफ में तीन बार नहाती हैं। पैदा होने पर, शादी के दिन और मौत के बाद। उसके बाद वे कभी पानी से स्नान नहीं करतीं। तो फिर वे साफ-सफाई कैसे करती हैं? उनका रहस्य है स्मोक बाथ और ओटजाइज लेप। हर रोज सुबह महिलाएं एक छोटे बर्तन में सुगंधित जड़ी-बूटियां और लकड़ी जलाकर धुआं निकालती हैं। फिर वे इस धुएं के ऊपर झुककर बैठ जाती

हैं। धुआं पूरे शरीर को घेर लेता है और पसीना निकालकर त्वचा को साफ करता है। इस प्रक्रिया से बैक्टीरिया मरते हैं और शरीर से दुर्गंध नहीं आती। इसके बाद वे लाल रंग की मिट्टी (रेड ओचर) को मक्खन या फैट के साथ मिलाकर पेस्ट बनाती हैं। इसे पूरे शरीर और बालों पर मलती हैं। यह ओटजाइज लेप सिर्फ सौंदर्य के लिए नहीं है। यह कई फायदे देता है।

सूरज की तेज किरणों से त्वचा की रक्षा करता है (प्राकृतिक सनस्क्रीन) कीड़ों से बचाता है। त्वचा को नरम और चमकदार रखता है। एंटीबैक्टीरियल गुणों के कारण साफ-सफाई बनाए रखता है। पसीने की ग्रंथियों को कुछ हद तक ब्लॉक करता है।

इस लेप की वजह से हिम्बा महिलाओं की त्वचा और बाल गहरे लाल रंग के हो जाते हैं, जो उनकी पारंपरिक पहचान है। यह लाल रंग उन्हें बेहद आकर्षक बनाता है। कई पर्यटक और फोटोग्राफर उनकी इस अनोखी सुंदरता को कैद करने के लिए नामीबिया जाते हैं। हिम्बा संस्कृति में यह परंपरा सदियों पुरानी है। यहां पानी इतना कीमती है कि इसे पीने और पशुओं के लिए बचाकर रखा जाता है। महिलाओं को पानी से नहाने की अनुमति नहीं है क्योंकि इससे पानी बर्बाद होता है। पुरुष कभी-कभी पानी से नहा सकते हैं, लेकिन महिलाओं के लिए स्मोक बाथ और ओटजाइज ही मुख्य सफाई का तरीका है। हिम्बा महिलाएं अपनी खास हेयरस्टाइल के लिए भी जानी जाती हैं। छोटी उम्र की लड़कियां आगे की ओर चोटी बनाती हैं, जबकि शादीशुदा महिलाएं लंबी लाल चोटियां बनाती हैं जो ओटजाइज से ढकी होती हैं। यह उनकी सामाजिक स्थिति भी बताता है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो ओटजाइज में मौजूद रेड ओचर (हेमेटाइट) में एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण होते हैं। मक्खन त्वचा को मॉइस्चराइज करता है। स्मोक बाथ में इस्तेमाल होने वाली जड़ी-बूटियां प्राकृतिक रूप से कीटाणुनाशक होती हैं। इसलिए पानी के बिना भी उनकी त्वचा स्वस्थ रहती है।

यहां चाव से खाए जाते हैं कोबरा के अंडे, अंदर से होते हैं जहरीले, उबालते ही खत्म हो जाता है जहर!

थाईलैंड की सड़कों पर सांप से बनी डिशेज लंबे समय से पर्यटकों और स्थानीय लोगों को आकर्षित करती रही है। कोबरा का मांस, सांप के पकौड़े और अब कोबरा के अंडे भी इस लिस्ट में शामिल हो गए हैं। सोशल मीडिया पर कोबरा के अंडे उबालते और खाते हुए वीडियो तेजी से वायरल हो रहे हैं। लोग इन्हें बड़े चाव से खा रहे हैं लेकिन विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि इन अंडों को ठीक से पकाए बिना खाना जानलेवा साबित हो सकता है। थाईलैंड, इंडोनेशिया, चीन और कुछ अन्य एशियाई देशों में सांप के अंडे खाए जाते हैं। कोबरा जैसे जहरीले सांपों के अंडे भी बाजार में मिलते हैं। लेकिन इन्हें खाने से पहले अच्छे से पकाना जरुरी है वरना अंजाम खतरनाक हो सकता है। वायरल हो रहे वीडियो के मुताबिक, लोग कोबरा के अंडों को पानी में अच्छे से उबालते हैं। कुछ जगहों पर इन्हें तेल में तलकर या अन्य तरीकों से पकाकर सर्व किया जाता है। स्वाद की बात करें तो कई लोग इसे मुर्गी के अंडे से मिलता-जुलता लेकिन थोड़ा अलग और मजबूत स्वाद वाला बताते हैं। लेकिन असली सवाल यह है कि क्या कोबरा के अंडे जहरीले होते हैं? विशेषज्ञों के अनुसार सांप के अंडों में सीधे तौर पर जहर नहीं होता। सांप का जहर विशेष ग्रंथियों में बनता है और अंडों में नहीं पहुंचता। फिर भी, अगर अंडा फर्टिलाइज्ड हो और अंदर भ्रूण विकसित हो रहा हो तो कुछ जोखिम बढ़ सकता है। सबसे बड़ा खतरा बैक्टीरिया और पैथोजेंस का है। कच्चा या अधपका सांप का अंडा खाने से पेट संबंधी बीमारियां, फूड पॉइजनिंग या अन्य संक्रमण हो सकते हैं। थाईलैंड के स्ट्रीट फूड मार्केट में कोबरा के अंडे बेचने वाले दावा करते हैं कि इन्हें अच्छे से उबालने पर कोई खतरा नहीं रहता। उबालने की प्रक्रिया में जहर (अगर कोई हो) नष्ट हो जाता है। लेकिन कई स्वास्थ्य विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि सांप जैसे जंगली जानवरों के अंडे खाने से पहले सावधानी बरतनी चाहिए। थाईलैंड आए पर्यटकों को ऐसे स्टॉल से दूर रहने की सलाह दी जाती है जहां स्वच्छता का ध्यान ना रखा जा रहा हो। सोशल मीडिया पर एक वीडियो में दिखाया गया है कि विक्रेता कोबरा के अंडे तोड़कर दिखाते हैं और फिर उन्हें उबालते हैं। लोग इन्हें चटनी या सॉस के साथ खाते नजर आते हैं। भारत में भी यह वीडियो शेयर हो रहा है और लोग हैरानी जता रहे हैं कि क्या लोग इतने खतरनाक भोजन को चाव से खा सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से सांप के अंडे प्रोटीन से भरपूर होते हैं। लेकिन इनमें साल्मोनेला जैसे बैक्टीरिया का खतरा अधिक होता है। इसलिए इन्हें कम से कम 10-15 मिनट तक अच्छे से उबालना जरूरी बताया जाता है। अधपके अंडे खाने से पेट दर्द, उल्टी, दस्त और गंभीर मामलों में अस्पताल पहुंचना पड़ सकता है। थाईलैंड में सांप का मांस और अंडे खाने की परंपरा पुरानी है। कुछ लोग मानते हैं कि सांप का मांस और अंडा ताकत बढ़ाता है और पुरुष शक्ति के लिए फायदेमंद है। हालांकि यह दावा वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं है।

एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में बढ़ोतरी पर सियासी घमासान

» विपक्ष ने की संसद में चर्चा की मांग

» छोटे कारोबारियों और जनता की बढ़ीं चिंताएं

कांग्रेस व सपा ने एनडीए सरकार पर किया प्रहार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में बढ़ोतरी पर सियासी घमासान छिड़ गया है, जहां राहुल गांधी और अखिलेश यादव जैसे विपक्षी नेताओं ने इसे चुनाव बाद महंगाई का झटका बताते हुए सरकार की कड़ी आलोचना की है। विपक्ष ने इस फैसले को छोटे कारोबारियों और आम जनता पर बोझ बताते हुए संसद में चर्चा की मांग की है। विपक्षी दलों ने केंद्र सरकार पर कड़ा प्रहार करते हुए इसे जनता की जेब पर बोझ बताया है।

कांग्रेस ने सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि महंगाई बेकाबू होती जा रही है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्होंने पहले ही चेतावनी दी थी कि चुनाव खत्म होते ही महंगाई का झटका लगेगा। विपक्ष का मानना है कि लगातार बढ़ती कीमतें मध्यम वर्ग और छोटे व्यापारियों की कमर तोड़ रही हैं। रसोई का बजट बिगड़ने से हर घर में चिंता का माहौल है।

हालांकि, सरकार की ओर से अभी तक इस पर कोई विस्तृत सफाई नहीं आई है, लेकिन जिस तरह से विपक्ष एकजुट होकर सवाल उठा रहा है, उससे आने वाले दिनों में यह राजनीतिक मुद्दा और बड़ा रूप ले सकता है।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें भी बढ़ सकती हैं : राहुल

राहुल गांधी ने इस फैसले की निंदा करते हुए कहा कि कमर्शियल गैस महंगी होने से छोटे दुकानदारों, ढाबा चलाने वालों, हलवाई और बेकरी जैसे कारोबारों पर बुरा असर पड़ेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि जब इन व्यापारियों का खर्च बढ़ेगा, तो इसका सीधा असर आम जनता के खाने की थाली पर होगा। राहुल गांधी ने यह भी आशंका जताई कि आने वाले समय में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में भी इसी तरह की बढ़ोतरी देखी जा सकती है।

महंगाई एक आंकड़ा नहीं बल्कि लोगों की जिंदगी की सच्चाई है : अखिलेश

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी तीखा तंज कसते हुए कहा कि महंगाई सिर्फ एक आंकड़ा नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी की सच्चाई है। उन्होंने कहा कि जो लोग खुद बाजार जाकर सामान नहीं खरीदते, उन्हें आम आदमी की तकलीफ समझ नहीं आती। अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा कि सरकार को बढ़ती कीमतों और बेरोजगारी पर संसद में गंभीर चर्चा करनी चाहिए और इस जनविरोधी कदम के खिलाफ निंदा प्रस्ताव लाया जाना चाहिए।

गठबंधन से नहीं मिल रहा राज्य दर्जा बहाली को समर्थन : फारुक

» नेंका चीफ ने कांग्रेस पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पुलवामा । नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर की राज्य का दर्जा बहाल करने के मुद्दे पर इंडिया गठबंधन, खासकर कांग्रेस से अपेक्षित समर्थन नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनी हुई है, लेकिन गठबंधन इस मुद्दे पर एकजुट और मजबूत रुख अपनाने में विफल रहा है।

जम्मू-कश्मीर के मुद्दों पर ठोस और संयुक्त रणनीति की कमी सबसे बड़ी समस्या है। फारूक ने कहा कि गठबंधन को केवल चुनावी मंच नहीं रहना चाहिए बल्कि देश और जम्मू-कश्मीर के भविष्य जैसे मुद्दों पर नियमित रूप से बैठकें करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि विपक्ष अभी तक ऐसा नेतृत्व नहीं दे पाया है जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से मुकाबला कर सके। केंद्र सरकार पर भरोसा जताते हुए कहा कि राज्य का दर्जा बहाल करने का आश्वासन प्रधानमंत्री और गृह मंत्री दोनों ने दिया है और उम्मीद है कि चुनावी प्रक्रियाएं पूरी होने के बाद इस दिशा में निर्णय लिया जाएगा। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यदि बार-बार दिए गए आश्वासनों के बावजूद राज्य का दर्जा बहाल नहीं होता है, तो उनकी पार्टी कानूनी विकल्पों पर भी विचार कर सकती है और सुप्रीम कोर्ट का रुख किया जा सकता है।

विवादित बयान पर राहुल गांधी को कोर्ट से मिली राहत

» एफआईआर दर्ज करने की याचिका खारिज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को इलाहाबाद हाईकोर्ट से बड़ी राहत मिली है। अदालत ने उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग वाली याचिका को पूरी तरह खारिज कर दिया है। यह मामला राहुल गांधी द्वारा दिए गए एक पुराने बयान से जुड़ा था, जिस पर शुक्रवार को हाईकोर्ट की एकल पीठ ने अपना फैसला सुनाया। कोर्ट ने पहले ही इस मामले में सुनवाई पूरी कर ली थी और 8 अप्रैल को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। यह विवाद राहुल गांधी के उस बयान से शुरू हुआ था जो उन्होंने 15 जनवरी 025 को कांग्रेस के नए मुख्यालय इंदिरा भवन के उद्घाटन के दौरान दिया था।

याचिकाकर्ता सिमरन गुप्ता ने आरोप लगाया था कि राहुल गांधी का बयान देश के खिलाफ है। उन्होंने पहले संभल की निचली अदालत में शिकायत की थी, लेकिन वहां से अर्जी खारिज होने के बाद उन्होंने इलाहाबाद हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। हाईकोर्ट ने भी निचली अदालत के फैसले को सही माना और याचिका को कमजोर बताते हुए रद्द कर दिया। राहुल गांधी ने अपने भाषण में कहा था कि उनकी लड़ाई सिर्फ भाजपा या आरएसएस से नहीं है, बल्कि इंडियन स्टेट से भी है। उन्होंने आरोप लगाया था कि भाजपा और आरएसएस ने देश की सभी संस्थाओं पर कब्जा कर लिया है, इसलिए यह लड़ाई अब निष्पक्ष नहीं रह गई है। उन्होंने यह भी कहा था कि कांग्रेस की विचारधारा हजारों साल पुरानी है और वे इसी विचारधारा के साथ संघर्ष कर रहे हैं। इसी इंडियन स्टेट वाले शब्द के इस्तेमाल को लेकर उनके खिलाफ मामला दर्ज कराने की कोशिश की गई थी।

पंजाब के सीएम पर नशे में आने का आरोप

» विपक्ष ने उठाया सवाल, जांच की मांग की

» सत्ता तथा विपक्ष के बीच तीखी बयानबाजी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान एक बार फिर विवादों के केंद्र में आ गए हैं। आज विधानसभा सत्र के दौरान विपक्ष ने उन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि वह कथित रूप से नशे की हालत में सदन में पहुंचे। इस आरोप ने राज्य की राजनीति को गरमा दिया है और सत्ता तथा विपक्ष के बीच तीखी बयानबाजी शुरू हो गई है। बहरहाल, विपक्ष लगातार मुख्यमंत्री की कार्यशैली और व्यक्तिगत आचरण पर सवाल उठा रहा है, जबकि सत्तारुढ़ दल इन आरोपों को बेबुनियाद बता रहा है।

विधायकों का तुरंत अल्कोमीटर और डोप परीक्षण कराया जाए : बाजवा

आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि क्या इन आरोपों की कोई औपचारिक जांच होती है या यह मामला केवल राजनीतिक आरोप प्रत्यारोप तक ही सीमित रह जाता है। पंजाब विधानसभा में विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने इस मुद्दे को जोरदार तरीके से उठाया। उन्होंने मांग की कि मुख्यमंत्री समेत सभी विधायकों का तुरंत अल्कोमीटर और डोप परीक्षण कराया जाए ताकि सच्चाई सामने आ सके। बाजवा का कहना है कि यदि इस तरह के आरोप लग रहे हैं तो पारदर्शिता बनाए रखने के लिए जांच जरूरी है।

पहली बार नहीं है, सीएम कई बार ऐसा कर चुके हैं : मालीवाल

भारतीय जनता पार्टी की सांसद स्वाति मालीवाल ने भी इस मामले को और हवा दे दी। उन्होंने एक वीडियो साझा करते हुए दावा किया कि मुख्यमंत्री नशे की हालत में विधानसभा पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री को तुरंत शराब जांच से गुजरना चाहिए और यदि आरोप सही साबित होते हैं तो उन्हें पद से हटा देना चाहिए। स्वाति मालीवाल ने अपने बयान में गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि यह पहली बार नहीं है जब मुख्यमंत्री पर इस तरह के सवाल उठे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि वह पहले भी धार्मिक स्थलों, सरकारी बैठकों और यहां तक कि विदेश यात्राओं के दौरान भी नशे में पाए गए। मालीवाल ने यह भी कहा कि चुनाव से पहले मुख्यमंत्री ने अपनी माता के सिर पर हाथ रखकर शराब न पीने का वादा किया था, लेकिन अब उस वादे का पालन नहीं हो रहा है।

देवीलाल की विरासत पर फिर रार

दिग्विजय चौटाला का इनेलो पर वार, दुष्यंत को बताया असली सिपाही

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। दिग्विजय चौटाला ने चौटाला परिवार की राजनीतिक विरासत और मौजूदा सियासी हालात को लेकर लिखा कि चौधरी देवीलाल की राजनीति का सबसे बड़ा सिद्धांत था कि कार्यकर्ता की मुश्किल में सबसे पहले उसके साथ खड़ा हुआ जाए। दिग्विजय ने मौजूदा घटनाक्रम को लेकर इनेलो पर निशाना साधते हुए संकेत दिए कि अब इनेलो नेता इस मुद्दे पर खुलकर बोलने से बच रहे हैं।

चर्चा है कि ऊपर से चुप्पी के निर्देश हैं और मामले को जल्द ठंडे बस्ते में डालने की तैयारी है। साथ ही कांग्रेस पर भी सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि विपक्ष भी दूरी बनाए नजर आ रहा है। ऐसे में दिग्विजय ने साफ तौर पर दुष्यंत चौटाला को संघर्ष के केंद्र में रखा।

टेस्ट रैंकिंग में भारत तीसरे स्थान पर

» डब्ल्यूटीसी चक्र में छठे स्थान पर है भारतीय टीम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। खेल की वैश्विक संस्था अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने शुक्रवार को वार्षिक टेस्ट टीम की रैंकिंग जारी की, जिसमें बड़ा फेरबदल देखने को मिला। भारतीय टेस्ट टीम एक स्थान की छलांग लगाकर तीसरे स्थान पर पहुंच गई। शुभमन गिल की अगुवाई वाली टीम ने इंग्लैंड को पीछे छोड़ दिया। वहीं, शीर्ष पर ऑस्ट्रेलिया का दबदबा है। रैंकिंग अपडेट में मई 2025 के बाद खेले गए मैचों को महत्व दिया गया है, जबकि उससे पहले के मुकाबलों का प्रभाव 50 प्रतिशत कर दिया गया है। इसी कारण रैंकिंग में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले।

शीर्ष पर ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम 131 रेटिंग अंकों के साथ मजबूती से कायम है और उसने अपनी बढ़त को और मजबूत किया है। दूसरे स्थान पर मौजूदा विश्व टेस्ट चैंपियन दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम 119 अंकों के साथ बरकरार है। सबसे बड़ा बदलाव तीसरे स्थान के लिए हुआ, जहां भारत 104 अंकों के साथ एक पायदान ऊपर चढ़ गया, जबकि इंग्लैंड 102 अंकों के साथ चौथे स्थान पर खिसक गया। इंग्लैंड को पुराने मैचों जैसे न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू जीत और पाकिस्तान में मिली सीरीज जीत का पूरा फायदा नहीं मिला। वहीं, विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2025-27 चक्र की बात करें तो भारत अभी भी छठे स्थान पर है, जहां उसका अंक प्रतिशत 48.15 है। टीम को घरेलू सीरीज में दक्षिण अफ्रीका से हार और ऑस्ट्रेलिया दौरे पर बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी गंवाने का नुकसान उठाना पड़ा है। इस समय डब्ल्यूटीसी तालिका में ऑस्ट्रेलिया 87.50 अंक प्रतिशत के साथ शीर्ष पर है, जबकि न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम 77.78 अंक प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है।

अंक तालिका में नंबर एक बनने से चूकी राजस्थान

नई दिल्ली। जयपुर में राजस्थान रॉयल्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच खेला गया। राजस्थान के पास इस मैच को जीतकर अंक तालिका में पहले स्थान पर पहुंचने का मौका था, लेकिन टीम इसमें नाकाम रही और एक बड़ा स्कोर बनाने के बाद भी हार गई। राजस्थान की हार और दिल्ली कैपिटल्स की जीत की पटरी पर वापसी से अंक तालिका में फेरबदल हुआ है। हालांकि, दिल्ली की टीम अभी भी शीर्ष चार में नहीं पहुंच सकी है। बता दें राजस्थान रॉयल्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए छह विकेट के नुकसान पर 225 का स्कोर बनाया था।लक्ष्य हासिल करने उतरी दिल्ली ने 19.1 ओवर में तीन विकेट पर 226 रन बनाकर मैच सात विकेट से जीत लिया। पंजाब किंग्स आठ मैचों में 13 अंक लेकर पहले स्थान पर बरकरार है। आरसीबी नौ मैचों में 12 अंक लेकर दूसरे स्थान पर है। सनराइजर्स हैदराबाद नौ मैचों में 12 अंक लेकर तीसरे और राजस्थान रॉयल्स 10 मैचों में 12 अंक लेकर चौथे स्थान पर है। गुजरात टाइटंस नौ मैचों में 10 अंक लेकर पांचवें, दिल्ली नौ मैचों में आठ अंक लेकर छठे, चेन्नई सुपर किंग्स आठ मैचों में छह अंक लेकर सातवें स्थान पर मौजूद है।

युद्ध क्षेत्र से लौटे नाविकों ने खोल दी सरकार की पोल

युद्ध क्षेत्र से वापस लौटे नाविकों ने वतन वापसी का श्रेय फॉरवर्ड सीमेन यूनियन ऑफ इंडिया (एफएसयूआई) के महासचिव मनोज कुमार यादव को दिया

» नहीं मिली सरकारी मदद, श्रमिक संगठनों की मदद से वापसी

» संगठन का दावा अभी भी फंसे हैं 20 हजार से ज्यादा लोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। यह खबर आंखे खोल देने वाली है और युद्ध क्षेत्र की भयानकता को बताने के लिए काफी है। मौत के मुहाने से जिंदा लौटे कुछ नाविकों ने युद्ध का आखों देखा हाल मीडिया को सुनाया है । इस हाल को जिसने भी सुना उसके रोंगटे खड़े हो गये। उत्तर प्रदेश के मनन सिंह चौहान पिछले साल अक्टूबर में तेहरान गए थे और एक जहाज पर ट्रेनी वाइपर के तौर पर काम कर रहे थे।

मनन हाल ही में युद्धग्रस्त ईरान से भारत लौटे है उन्होंने बताया कि उनके आस-पास ही मिसाइलें दागी जा रही थीं और उन्हें अपने जहाज के कप्तान से साइन-ऑफ (जहाज छोड़ने की अनुमति) भी नहीं मिल रही थी, जिसके चलते उन्होंने घर लौटने की सारी उम्मीदें खो दी थीं। उन्होंने अपनी और अपने साथियों की वतन वापसी का श्रेय फॉरवर्ड सीमेन यूनियन ऑफ इंडिया (एफएसयूआई) के महासचिव मनोज कुमार यादव को दिया और कहा कि हम ऐसी स्थिति में फंस गए थे जहाँ हमें कैप्टन से साइन-ऑफ नहीं मिल रहा था।

मनोज सर ने बचाई जान

मनन चौहान ने कहा, वहां से, हम आर्मेनिया पहुंचे। दिबाकर यादव नाम का एक लड़का युद्ध में फंसा हुआ था। मैंने उससे मनोज सर का नंबर लिया और उनसे संपर्क किया। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें वेतन के तौर पर मिले 600 डॉलर में से 300 डॉलर घर लौटने में ही खर्च हो गए। उन्होंने कहा, हमने घर लौटने की उम्मीद लगभग खो दी थी, लेकिन मनोज यादव सर का शुक्रिया, हम वापस आ पाए। चौहान ने आरोप लगाया कि जो नाविक पश्चिम एशिया के युद्ध में फंसे हुए हैं, उन्हें घर लौटने के लिए सरकार से कोई मदद नहीं मिली है। उन्होंने कहा, अभी भी, लगभग 80-90 लोग वहाँ फँसे हुए हैं। इसके अलावा, उन्होंने शिकायत की कि कई ऐसे एजेंट हैं जो नाविकों के साथ धोखाधड़ी करते हैं। उन्होंने बताया, हमें बताया गया था कि हमें दुबई ले जाया जा रहा है, लेकिन इसके बजाय हमें ईरान भेज दिया गया।

केबिन में जमीन को हिलते हुए महसूस किया

मीडिया से बात करते हुए उन्होंने बताया कि जब भी मिसाइलें गिरती थीं, तो ऐसा लगता था कि हम बच नहीं पाएंगे, लेकिन शायद हम अपने माता-पिता के आशीर्वाद की वजह से बच पाए। ईद के दिन, लगभग 70-80 मिसाइलें गिरीं। मैं अपने केबिन में जमीन को हिलते हुए महसूस कर सकता था। उन्होंने बताया कि सभी ईरानी लोग जहाज छोड़कर चले गए थे और वह और दो अन्य भारतीय अकेले रह गए थे। उन्होंने कहा, हमारा जहाज खुर्रमशहर में फंसा हुआ था, जहां कई मिसाइलों को निशाना बनाया जा रहा था। 12 अप्रैल, 26 को, जहाज वहां से बंदर अब्बास के लिए रवाना हुआ, जहां एक नए कैप्टन ने हमें साइन-ऑफ दिया। वहां से, हम टैक्सी से बुशेहर पहुंचे और फिर जोल्फा गए।

आर्मेनिया की सीमा पार करने के बाद उम्मीद जगी

हरियाणा के एक अन्य नाविक, रवि ने कहा, आर्मेनिया की सीमा पार करने के बाद ही, हमारे मन में भारत पहुंचने की उम्मीद फिर से जगी। ईरान में अपनी स्थिति के बारे में उन्होंने कहा, सोते समय जमीन इतनी जोर से हिलती थी कि ऐसा लगता था जैसे मिसाइलें हमारे पास ही गिर रही हैं। कभी-कभी तो डर के मारे हम सो भी नहीं पाते थे। रवि ने आगे कहा, मैंने अपने परिवार को अपनी स्थिति के बारे में कुछ नहीं बताया, क्योंकि मेरी मां बहुत जल्दी परेशान हो जाती हैं। एफएसयूआई के महासचिव मनोज कुमार यादव ने बताया कि हवाई क्षेत्र बंद होने की वजह से नाविकों को सड़क के रास्ते से लंबा और ज्यादा मुश्किल सफर तय करना पड़ा। उनकी आर्थिक तंगी का जिक्र करते हुए यादव ने कहा, उनके पास न तो किराया देने के पैसे थे और न ही दिन में दो बार खाना खाने के लिए। दूसरों के लिए यह भले ही सीजफायर (युद्धविराम) हो, लेकिन नाविकों को इससे अब तक कोई फ़ायदा नहीं हुआ है। उनमें से 20000 से ज्यादा लोग अभी भी वहीं फंसे हुए हैं।

ईरान ने स्थायी शांति के लिए अमेरिका को नया प्रस्ताव भेजा

» पाकिस्तान के माध्यम से अपना रुख अमेरिका तक पहुंचाया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ईरान ने अमेरिका को एक नया प्रस्ताव भेजा है। यह प्रस्ताव ऐसे समय में आया है जब दोनों देशों के बीच बातचीत रुकी हुई है। बातचीत का मुख्य उद्देश्य अस्थायी सीजफायर को स्थायी शांति में बदलना है। ईरान के सरकारी मीडिया ने बताया कि तेहरान ने पाकिस्तान के माध्यम से अपना रुख अमेरिका तक पहुंचाया है।

पाकिस्तान ने पिछले महीने हुई सीधी बातचीत के पहले दौर में भी मध्यस्थता की थी। ट्रंप ने कहा कि वह इस प्रस्ताव से संतुष्ट नहीं हैं। ईरान की इस योजना की खबर सामने आते ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में तुरंत गिरावट दर्ज की गई।

ट्रंप प्रशासन का दावा है कि अप्रैल में हुए सीजफायर के बाद युद्ध समाप्त हो गया है। इस व्याख्या से व्हाइट हाउस को कांग्रेस की मंजूरी लेने की जरूरत से बचने का मौका मिल सकता है। हालांकि, ट्रंप ने स्पष्ट किया कि ईरान पर नौसैनिक नाकाबंदी जारी रहेगी। ईरान ने भी कहा है कि होर्मुज जलडमरूमध्य में आवाजाही पर लगाई गई पाबंदियां बनी रहेंगी। समाचार एजेंसी के अनुसार, ईरान के नए प्रस्ताव का मसौदा गुरुवार शाम को पाकिस्तान को सौंप दिया गया। एजेंसी ने प्रस्ताव के विस्तार पर कोई जानकारी नहीं दी, खासकर होर्मुज जलडमरूमध्य या ईरान की परमाणु गतिविधियों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर क्या प्रस्ताव रखा गया है, इस बारे में कुछ नहीं बताया गया। ट्रंप ने गुरुवार को कहा कि इस नाकाबंदी से ईरान को तेल से होने वाली कमाई से वंचित होना पड़ रहा है, तेहरान को बातचीत की मेज पर वापस ले आएगी।

ईरान की संसद के स्पीकर ने किया आर्थिक लड़ाई का आह्वान

ईरान की संसद के स्पीकर मोहम्मद बाघर गालिबफ ने एक्स पर अपने देश के विशाल सीमा का जिक्र करते हुए कहा कि इतनी बड़ी सीमाओं वाले देश की घेराबंदी करने की कोशिश में आपको शुभकामनाएं। अन्य ईरानी अधिकारी ने कहा कि यह घेराबंदी दोनों पक्षों के बीच नई बातचीत शुरू करने और होर्मुज को फिर से खोलने के लिए हटाया जाना जरूरी है, तेल की कीमतों को और बढ़ा देगी। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला मोजतबा खामेनेई ने अपने लोगों से आर्थिक लड़ाई लड़ने और अपने दुश्मनों को निराश करने का आग्रह किया।

बंगाल के दो विधानसभा क्षेत्र के 15 बूथों पर पुनर्मतदान जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल के दो निर्वाचन क्षेत्रों के 15 मतदान केंद्रों पर पुनर्मतदान जारी है, लोग भारी संख्या में मतदान केंद्रों पर पहुंच रहे हैं। 29 अप्रैल को राज्य विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के दौरान मतों में हेराफेरी की कई शिकायतें प्राप्त हुई थीं। पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर और मगराहट पश्चिम निर्वाचन क्षेत्रों के 15 बूथों पर पुनर्मतदान हो रहा है।

चुनाव आयोग ने अपने आदेश में कहा था कि मगराहात पश्चिम के 11 मतदान केंद्रों और डायमंड हार्बर के 4 मतदान केंद्रों पर दोबारा मतदान होगा। आयोग ने मतदान क्षेत्रों में व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश भी जारी किए हैं और यह भी कहा है कि चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को आज होने वाले नए मतदान के बारे में लिखित रूप में सूचित किया जाना चाहिए।

आप के पूर्व सदस्य की मुश्किलें बढ़ी

» संदीप पाठक के खिलाफ दो एफआईआर, दिल्ली पहुंची पंजाब पुलिस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के पूर्व सदस्य और राज्यसभा सांसद संदीप पाठक की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। पंजाब में दो अलग-अलग जिलों में उनके खिलाफ दो एफआईआर दर्ज की गई हैं, जानकारी के मुताबिक, दोनों ही मामले गैर-जमानती धाराओं में दर्ज हैं, जिससे कानूनी स्थिति और अधिक गंभीर हो गई है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, दोनों एफआईआर अलग-अलग घटनाओं से जुड़ी हैं. हालांकि, अभी तक आरोपों का पूरा विवरण सार्वजनिक नहीं किया गया है. मामले की जांच पंजाब पुलिस कर रही है और आगे की कार्रवाई तेज किए जाने के संकेत हैं।

मुझे ऐसी किसी एफआईआर की जानकारी नहीं : संदीप

आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संदीप पाठक ने अपने खिलाफ एफआईआर दर्ज होने की रिपोर्ट्स पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्हें ऐसी किसी एफआईआर की कोई जानकारी नहीं है और न ही किसी पुलिस अधिकारी ने इस संबंध में उनसे संपर्क किया है। मैंने पूरी जिंदगी ईमानदारी और निष्ठा के साथ देश की सेवा की है. देश किसी भी पार्टी से बड़ा है, मैं कभी इसे धोखा नहीं दूंगा और न किसी को देने दूंगा, अगर मेरे जैसे व्यक्ति के खिलाफ कोई कार्रवाई की गई है, तो यह दिखाता है कि वे कितने डरे हुए हैं, मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता।

बंगाल काउंटिंग में केंद्रीय कर्मियों की तैनाती के मामले में सुप्रीम कोर्ट दखल नहीं देगा

केंद्र सरकार और केंद्रीय कर्मचारियों को काउंटिंग सुपरवाइजर नियुक्त करने पर था एतराज

» ईसी के फैसले के खिलाफ टीएमसी सुप्रीम कोर्ट पहुंची

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय कर्मचारियों को काउंटिंग सुपरवाइजर नियुक्त करने के चुनाव आयोग के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची टीएमसी को अदालत से झटका लगा है। चुनाव आयोग के फैसले के खिलाफ पहुंची ममता बनर्जी की पार्टी से शीर्ष अदालत ने कहा कि हम चुनाव आयोग के फैसले के खिलाफ नहीं जाएंगे और इसपर कोई आदेश जारी नहीं करेंगे।

कोर्ट ने साफ कहा कि ईसी को अपना अधिकारी चुनने का पूरा अधिकार है, शीर्ष अदालत ने कहा कि हम उनके काम में कोई दखल नहीं देंगे। बता दें कि टीएसी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल पैरवी कर रहे थे। कोर्ट ने आगे कहा कि केंद्र सरकार के कर्मचारी के साथ एक राज्य सरकार के कर्मचारी की भी तैनाती की जाएगी।

इलेक्शन कमीशन को अधिकारी चुनने का हक है : सुप्रीम कोर्ट

केंद्रीय कर्मचारियों को काउंटिंग सुपरवाइजर नियुक्त करने के फैसले के खिलाफ पहुंची टीएमसी को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि किसी आदेश की जरूरत नहीं है। सर्कुलर का पूरी तरह से पालन होगा, इलेक्शन कमीशन को अधिकारी चुनने का हक है, चुनाव आयोग अपने कर्मचारी पर खुद नियंत्रण कर सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने इसके साथ इस मामले पर दखल देने से इनकार कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कर्मचारियों की तैनाती नियमों के खिलाफ नहीं है। चुनाव आयोग का सर्कुलर ही लागू होगा। जस्टिस जे. बागची ने सुनवाई के दौरान कहा कि केवल एक ही पूल से चयन करना गलत नहीं कहा जा सकता।

चयन राज्य सरकार और केंद्र सरकार के कर्मचारियों में से रैंडम तरीके से होना चाहिए : सिब्बल

कपिल सिब्बल ने जवाब देते हुए कहा कि चयन राज्य सरकार और केंद्र सरकार के कर्मचारियों में से यादृच्छिक (रैंडम) तरीके से होना चाहिए। तब जस्टिस बागची ने कहा कि काउंटिंग सुपरवाइजर और काउंटिंग असिस्टेंट में से कम से कम एक केंद्र सरकार का कर्मचारी होना चाहिए। कपिल सिब्बल ने तब कहा कि तो फिर दूसरा राज्य सरकार का होना चाहिए, लेकिन यहां तो राज्य सरकार का कोई प्रतिनिधि नहीं है.,सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा कि यहां एक और गलतफहमी यह है कि राज्य सरकार और केंद्र सरकार के कर्मचारी अलग-अलग माने जा रहे हैं, जबकि वे सभी सरकारी कर्मचारी ही हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**